शोध सरोवर पत्रिका

आरती, वषुतक्काटु, तिरुवनन्तपुरम - 695 014, केरल राज्य।

RNI No. KERHIN/2017/70008 ISSN No. 2456-625 X

वर्ष 3 अंक 12 त्रैमासिक हिन्दी शोध पत्रिका 10 अक्तूबर 2019

मुख्य संपादक
डॉ.पी.लता

प्रबंध संपादक
डॉ.एस.तंकमणि अम्मा

सह संपादक
प्रो.सती.के
डॉ.एस. लीलाकुमारी अम्मा
श्रीमती वनजा.पी

संपादक मंडल
प्रो.एस.कमलम्मा
डॉ.जी.गीताकुमारी
डॉ.गिरिजा.डी
डॉ.बिन्दु.सी.आर
डॉ.षीना.यू.एस
डॉ.सुमा.आई
डॉ.एलिसबत्त जोर्ज
डॉ.लक्ष्मी.एस.एस
डॉ.धन्या.एल
डॉ.कमलानाथ.एन.एम
डॉ.अश्वती.जी.आर

सूचना : पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार संबंधित लेखकों के हैं। उनसे संपादक तथा प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

संपादकीय	:	3
केरल की हिंदी पत्रकारिता के भीष्माचार्य के.जी.बालकृष्ण पिल्लै जी	: डॉ. एस.तंकमणि अम्मा	6
श्री के.जी. बालकृष्ण पिल्लै - अनुपम व्यक्तित्व	: एस. चंद्रिका वेलायुधन नायर	9
स्वर्गीय के.जी.बालकृष्ण पिल्लै की रचनाएँ	:	12
के.जी. बालकृष्ण पिल्लै से साक्षात्कार	: डॉ.पी.लता	30
केरल के हिंदी वाङ्मय को डॉ.एन ई विश्वनाथ अय्यर का योगदान	: डॉ.बी. धन्या	34
सुनीता जैन की कहानियाँ	: डॉ. लक्ष्मी. एस.एस	37
मोहन राकेश की कहानी 'परमात्मा का कुत्ता' में व्यंग्य	: डॉ.कमलानाथ.एन.एम	42
हिन्दी की समर्थक महिला स्वर्गीय श्रीमती सुषमा स्वराज	: डॉ.पी.लता	47
श्रद्धांजली- प्रो. एम. जनार्दनन पिल्लै	:	50
सही उत्तर चुनें	: डॉ.पी.लता	8,33,41,46

लेखकों से निवेदन

भाषा, साहित्य, समाज एवं संस्कृति पर लिखी गयी स्तरीय मैलिक तथा अप्रकाशित रचनाएँ भेजें। प्राकशनार्थ अनूदित रचनाओं के साथ मूल लेखकों से प्राप्त सहमति पत्र भी भेजें। रचनाएँ डी.वी.सुरेख ई.एन फोण्ट में वर्ड या पेजमेकर फाइल में भेजें। रचना के अंत में अपना पूरा डाक पता, मोबाइल नंबर और ई-मेल पता भी अंकित करें। संक्षिप्त जीवन-परिचय और फोटो भी भेजें।

संपादक

डॉ.पी.लता

शोध सरोवर पत्रिका

मूल्य : एक प्रति रु.100/-

वार्षिक शुल्क रु.1200/-

सहकर्मी पुनरवलोकन समिति :

डॉ.एच.परमेश्वरन

डॉ.टी.के.नारायण पिल्लै

डॉ.के.श्रीलता

पत्रिका के संबंध में अधिक जानकारी केलिए संपर्क करें - डॉ.पी.लता (संपादक, शोध सरोवर पत्रिका; मंत्री, अखिल भारतीय हिन्दी अकादमी), आरती, टी.सी. 14/1592, फोरस्ट ऑफीस लेन, ई-28, वषुतक्काटु, तिरुवनन्तपुरम - 695 014, केरल राज्य। फोन : 0471 - 2332468, 9946253648

ई-मेल : akhilbharatheeyhindiacademy@gmail.com

वेबसाइट : www.shodhsarovarpatrika.co.in

संपादकीय

श्री के.जी. बालकृष्ण पिल्लै

श्री के.जी. बालकृष्ण पिल्लै का जन्मस्थान है चिंगोली, आलप्पुषा जिला, केरल। 19-02-1934 को उनका जन्म हुआ। पिता जी.कुञ्ञुरामन नायर और माता जी.अम्मुक्कुट्टी अम्मा हैं। पत्नी हैं श्रीमती पी.सरोजिनी अम्मा। दो संतानें हैं-श्रीमती एस.गीता(एम.एस.सी. अग्रिकलचर,कृषि अफ़्सर) और डॉ.बी.एस.विवेकानन्दन पिल्लै(एम.ए, पीएच.डी; हिन्दी अध्यापक, सरकारी हाई स्कूल, मलप्पुरम्)।

पिल्लैजी केरल कृषी विश्वविद्यालय में वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी थे। हिन्दी शिक्षण निष्णात(केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा) परीक्षा पास हैं। गीता भवन, पेरूरक्कटा, पी. ओ, तिरुवनन्तपुरम में रहते थे कि समर्पित हिन्दी सेवी पिल्लैजी का निधन हुआ।

साहित्यक रचनाएँ: पिल्लैजी ने मलयालम, अंग्रेज़ी और हिन्दी में रचनाएँ की हैं, जैसे- मलयालम- तीवण्टियिल नालु दिवसम्(काल्पनिक यात्रावृत्त); वीटुम विद्याभ्यासमवुम्; चिरि उणरुन्नु; मद्यम नमुक्कु वेण्टे वेण्टा जैसी एक दर्जन पुस्तिकाएँ- नव साक्षरोपयोगी; 'अनौपचारिक विद्याभ्यासम्' पाक्षिक पत्रिका में 'कोच्चु कोच्चु विशेषङ्ङल' शीर्षकवाला स्थायी स्तंभ; कतिपय मलयालम कविताएँ(विभिन्न पत्रिकाओं में प्रकाशित) आदि। हिन्दी की कुछ कहानियों और कविताओं का मलयालम में अनुवाद (पत्रिकाओं में प्रकाशित) किया है। हिन्दी में लिखित रचनाएँ हैं- 'केरल' पुस्तक (प्रकाशक -राजपाल एन्ट सन्ज़, दिल्ली); कविताएँ, लेख, कहानियाँ, फीचर आदि (700 से अधिक, विविध पत्रिकाओं में); अंग्रेज़ी में कुछ लेख प्रकाशित हैं।

उन्होंने विविध कार्यालयों से जुड़कर हिन्दी सेवा की, जैसे- उपाध्यक्ष तथा अध्यक्ष- केरल हिन्दी प्रचार सभा; संपादक - केरल ज्योति पत्रिका; सदस्य - हिन्दी सलाहकार समिति, विधि मंत्रालय ; हिन्दी सलाहकार समिति, शहरी विकास रोज़गार मंत्रालय; विद्या परिषद, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान; शास्त्रीय परिषद, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान; पुस्तक चयन समिति, केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय; केन्द्रीय हिन्दी समिति (इसके अध्यक्ष प्रधानमंत्री हैं।); हिन्दी सलाहकार समिति, खाद्य संस्करण मंत्रालय;अकादमिक काउंसिल, महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय आदि।

श्री के.जी. बालकृष्ण पिल्लैजी की हिन्दी कविताएँ उत्तर भारत की पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। उनमें से कुछ हैं – कविता से (पत्रिका : तलाशी, अंक: अगस्त 1994), कुसंग (पत्रिका : महावाणी, अंक: सितंबर 1998), जान को आज जगा देना है (पत्रिका : वीर मुलाका, अंक: दिसंबर 1998), जनतंत्र का तंत्र (पत्रिका : समाज प्रवाह, अंक: जुलाई 2006) आदि। 'कविता से' में प्रयुक्त बिंब देखिए –

प्रिय कविते!
तू सजधज के

अपने सुकुमार अंगों की
तरुण झाँकी मात्र दिखाके
क्षणप्रभा सी
क्षण भर में
कहाँ गायब हो गयी?
कब से मैं तुझे ढूँढ रहा हूँ।

प्रो.डी.तंकप्पन नायर और के.जी. बालकृष्ण पिल्लै ने मिलकर श्री थोमस जोर्ज की कविताओं का हिन्दी में अनुवाद 'हृदय की वाणी' (2014, प्रकाशक : जवाहर पुस्तकालय) नाम से किया। यह 50 कविताओं का अनुवाद है। इन दोनों अनुवादकों ने मिलकर तुंचत्तु रामानुजन एषुत्तच्छन की रचना 'हरिनामकीर्तनं' का हिन्दी अनुवाद व्याख्या सहित 'हरिनामकीर्तन' नाम से किया, जो केरल ज्योति पत्रिका में वर्ष 2013 - 2014 के अंकों में धारावाहिक प्रकाशित हुआ तथा बाद में पुस्तक रूप में निकला (प्रकाशक : जवाहर पुस्तकालय, वर्ष 2016)।

'महागुफ़ा में प्रवेश' (मूल कवि - विनोबा भावे) का मलयालम अनुवाद 'अंबा प्रसाद' पत्रिका (प्रकाशक : आट्टुकाल मंदिर ट्रस्ट, तिरुवनन्तपुरम) के कई अंकों में सन् 2010 से खंडशः प्रकाशित हुआ है। अनुवादक हैं श्री के.जी.बालकृष्ण पिल्लै। पहले प्रस्तुत अनुवाद 'किलिप्पाट्टु' मासिक पत्रिका (संपादक : प्रबोध चन्द्रन नायर ; प्रकाशक : तुंचन स्मारकं, तिरुवनन्तपुरम) के चार अंकों में खंडशः प्रकाशित हुआ। उसका बादवाला भाग 'अंबा प्रसाद' पत्रिका (सं. एषुवट्टूर राजराज वर्मा) में सन् 2010 से खंडशः प्रकाशित हुआ। मलयालम अनुवाद का नाम है 'ध्यानत्तेप्पट्टी विनोबा'।

लघु कथाएँ पत्रिकाओं में :- ऐसे भी कुछ हिन्दी लघु कथाकार केरल में हैं, जिनकी लघु कथाएँ मात्र पत्रिकाओं में निकली हैं। श्री.के.जी. बालकृष्ण पिल्लै ऐसे लघु कथाकार हैं। उनकी लघु कथाओं का विषय सामाजिक है। उनकी लघु कथाओं से पाठकों को कुछ न कुछ संदेश अवश्य मिलता है। उनकी लघु कथाएँ भारत के कई हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई हैं। उनमें से कुछ हैं – सास बहू संबन्ध (बिजनौर टाइम्स हिन्दी दैनिक, अंक : रविवार, 30 सितंबर 2007), 'भ्रूण हत्या का भीषण दण्ड' (भारद्वाज परिवार, अंकः अप्रैल - जून 2002), सत्याग्रह (अंजुरि, अंकः जुलाई - सितंबर 1999), यूनियनवाले (अंचल भारती, अप्रैल - जून 1998), ब्लैक बेल्ट (पनघट, जनवरी 2000), साहित्यकार की आत्महत्या (कात्यायनी, अंक : नवंबर 1971), चुनाव (जैमिनी अकादमी, जनवरी 1997) आदि। पिल्लैजी की लघुकथाओं के विषय सामयिक हैं।

श्रीमती मृदुला गर्ग के 'कठगुलाब' उपन्यास का उसी नाम से डॉ.एस. तंकमणि अम्मा और श्री के.जी.बालकृष्ण पिल्लै ने मिलकर अनुवाद किया (प्रकाशक : प्रियता / ज्ञानेश्वरी पब्लिकेशन, कालिकट; वर्ष 2008)।

श्री.के.जी बालकृष्ण पिल्लैजी रसायन और उर्वरक मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति के सदस्य थे। प्रस्तुत समिति की बैठक में भाग लेने दिल्ली गये तो हिन्दी लेखक श्री विष्णु प्रभाकर का आमंत्रण स्वीकार कर उनसे मिलने 09-07-2001 को पीतमपुरा (दिल्ली) के उनके घर गये। उस दिन की बस यात्रा तथा मुलाकात का संस्मरण 'श्री विष्णु प्रभाकर के साथ एक

घंटा' शीर्षक में ('हिन्दी प्रचार वाणी' पत्रिका, अंकः सितंबर 2001) पिल्लैजी ने लिखा है। 'केरल ज्योति' पत्रिका के अप्रैल 2008 अंक में प्रकाशित श्री के.जी. बालकृष्ण पिल्लै द्वारा लिखित संस्मरण है 'कुशल संगठक श्री.के.एम. सामुवलजी'। केरल हिन्दी प्रचार सभा के उपाध्यक्ष स्व. श्री के.एम.सामुवल को 'गंगाशरण सिंह पुरस्कार' प्राप्त हुआ तो उनकी संगठन - क्षमता से परिचित पिल्लैजी ने उक्त 'संस्मरण' लिखा। एक बार 'अखिल भारतीय हिन्दी साहित्य संघ' की बैठक में भाग लेने केलिए केरल हिन्दी प्रचार सभा के प्रतिनिधि के रूप में श्री के.जी.बालकृष्ण पिल्लै दिल्ली गये। तब प्रमुख गाँधीवादी कार्यकर्ता और वयोवृद्ध मनीषी, मराठी - गुजराती - हिन्दी के लेखक श्री.काका कालेलकर से मिलने यमुना नदी के किनारे राजघट में भी गये। उस मुलाकात के बारे में लिखे संस्मरण का शीर्षक है 'काका साहब के साथ अल्प समय' (केरल ज्योति, अंक : जनवरी 2011)। केरल हिन्दी प्रचार सभा के संस्थापक श्री.के.वासुदेवन पिल्लैजी (1904-1961) का निधन हुआ तो 'के. वासुदेवन पिल्लै स्मृति ग्रंथ' (1964, प्रकाशकः केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम) में कई केरलीय हिन्दी लेखकों ने पिल्लै जी पर संस्मरण लिखे। 'आचार्य श्री वासुदेवन पिल्लै' नामक संस्मरण इसमें बालकृष्ण पिल्लैजी ने लिखा। 'केरल ज्योति के 'डॉ.एन.ई. विश्वनाथअय्यर विशेषांक' (अगस्त 2006) में छपे डॉ.एन.ई. विश्वनाथ अय्यर पर लिखा संस्मरण है 'जीवमेव शरदः शतक'।

श्री के.जी.बालकृष्ण पिल्लैजी विविध मंत्रालयों की 'हिन्दी सलाहकार समिति' के सदस्य रहे थे और बैठकों में भाग लेने दिल्ली जाते थे। एक बार उन्होंने जो दिल्ली यात्रा की थी उसका वृत्तांत 'युवराज' पत्रिका में प्रकाशित हुआ।

श्री के.जी.बालकृष्ण पिल्लैजी ने भारत के विविध भागों से निकलते विविध हिन्दी दैनिकों में तत्कालीन विषयों पर 600 से अधिक फीचर लिखे।

श्री के.जी.बालकृष्ण पिल्लै (पूर्व संपादक, केरल ज्योति पत्रिका) का लेख है 'मार्क्सवादी और गाँधीवादी' (हिन्दुस्तानी ज़बान, जनवरी - मार्च 2009)। पिल्लैजी के सामयिक-सामाजिक विषयों पर लिखे कई लेख उत्तर भारत के हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हुए हैं।

मार्च 1966 से 'केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम' की मुख पत्रिका 'केरल ज्योति' नामक मासिक पत्रिका तिरुवनन्तपुरम से निकल रही है। इसके संपादक क्रमशः ये हैं - विद्वान के नारायण (1966-1969), श्री के.जी. बालकृष्ण पिल्लै (1969-2002), श्री कुन्नुकुषि़ कृष्णनकुट्टी (2003-2004), डॉ. एम.एस राधाकृष्ण पिल्लै (2004-2006) और प्रो.डी. तंकप्पन नायर (मई 2006-2010), डॉ.एम.एस.राधाकृष्ण पिल्लै (2010-2011), प्रो.डी.तंकप्पन नायर (2011से) आदि।

डॉ.एस. तंकमणि अम्मा और के.जी.बालकृष्ण पिल्लैजी ने मिलकर वयला वासुदेवन पिल्लै के तीन मलयालम नाटकों का हिन्दी में अनुवाद किया, जो इस प्रकार हैं–(1)अंदर कोई (2011, प्रकाशकः युक्ति प्रकाशन, नई दिल्ली) पिल्लैजी के 'अकत्तारो' नाटक का हिन्दी अनुवाद है।'अकत्तारो' के नाटककार और रचनाधर्मी दोनों के मूल लेखक वासुदेवन पिल्लै जी ही हैं। उत्तराधुनिक दौर में व्यक्ति और समाज को चुनौती दे रही जटिल समस्याओं का परदाफ़ाश इस नाटक का कथ्य है। बाज़ारवाद और अधिनिवेश के वैश्विक रास

में देशीय भाषा और संस्कृति का विनाश तथा उनकी जगह पर विदेशी तत्वों की प्रतिष्ठा जिस भाँति होती है, इन सबके ज्वलंत चित्र इस नाटक में प्रस्तुत हुए हैं। (2)बरसी (2011, प्रकाशकः वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली) महाभारत की कथा के आधार पर तथा समकालीन संदर्भ को दृष्टि में रहकर वयला वसुदेवन पिल्लै द्वारा रचित 'आण्टुबली' नाटक का हिन्दी अनुवाद है। कुरुक्षेत्र युद्ध में मारे गये योद्धाओं की याद में होनेवाले 'वार्षिक श्राद्ध' याने 'बरसी' को आधार बनाकर इसका अवतरण हुआ है। इसमें नारी उत्पीड़न की समस्या, युद्ध की समस्या तथा अन्य कई सामाजिक समस्याएँ नये मान के रूप में प्रस्तुत की गई हैं। (3) 'करारनामा' वयला वासुदेवन पिल्लै के अन्तिम नाटक 'उटंपटी' का अनुवाद है (2013, प्रकाशकः लोकभारत प्रकाशन, इलहबाद)।

यों पिल्लैजी की साहित्य रचनाएँ बहुआयामी हैं। 31 मई 2015 को दिवंगत हुए। समर्पित हिन्दी सेवी पिल्लैजी को भावभीनी श्रद्धांजली अर्पित करती हूँ।

संपादक
डॉ.पी.लता
मंत्री, अखिल भारतीय हिन्दी अकादमी
(पूर्व अध्यक्षा, हिन्दी विभाग,
सरकारी महिला महाविद्यालय)
तिरुवन्तपुरम, केरल राज्य।

केरल की हिंदी पत्रकारिता के भीष्माचार्य के.जी.बालकृष्ण पिल्लै जी

♦ डॉ. एस.तंकमणि अम्मा

विश्वास ही नहीं होता कि श्री.के.जी.बालकृष्ण पिल्लै को हमें छोड़कर गए चार साल बीत गए हैं। उनकी चौथी पुण्य तिथी 31-05-2015 को थी। इस अवसरपर उनके श्रीचरणों पर श्रद्धांजलि अर्पित है। केरल के हिंदी प्रचार का इतिहास चाहे यह प्रचार का हो, साहित्य-सृजन का हो, पत्रकारिता का हो अथवा अनुवाद-कार्य का हो वह के.जी.बालकृष्ण पिल्लैजी के बिना अधूरा ही रहेगा। हिंदी से जुड़े समस्त क्षेत्रों में अपने वर्चस्व की अमिट छाप लगानेवाले पिल्लैजी का आदर-सम्मान समस्त हिंदी संस्थाएँ करती हैं। राष्ट्रपिता महात्मागाँधी से मिलती-जुलती उनकी शक्ल ही उनकी ओर लोगों का ध्यान आकर्षित करने में सक्षम हैं। गाँधीजी का जैसा सादा जीवन और उच्च विचारवाला आदर्श भी उनके जीवन में घुलमिल गया है, यह अजब संयोग की ही बात है।

केरल के हिंदी प्रचार-क्षेत्र को पिल्लै जी की देन अनूठी है। 'केरल हिंदी प्रचार सभा' के अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, अध्यपाक आदि के तौर पर उन्होंने केरल के हिंदी प्रचार-क्षेत्र को खूब बढ़ावा दिया है। 'केरल हिंदी प्रचार सभा' की मुखपत्रिका 'केरल ज्योति' की ज्योति को सही अर्थ में भारत भर में फैलानेवाले उसके सजग एवं तपोनिष्ठ संपादक बालकृष्ण पिल्लै जी रहे हैं। उन्होंने इस पत्रिका के ज़रिए न केवल हिन्दी भाषा का प्रचार

किया, बल्कि केरल की भाषा मलयालम, उसका साहित्य एवं साहित्यकारों का परिचय विशाल हिंदी क्षेत्र को कराया और भारतीय भावात्मक एकता को सुदृढ़ बनाने का अहम् कार्य भी किया। 'केरल ज्योति' के संपादक की हैसियत से उन्होंने केरल के उदीयमान हिंदी लेखकों को प्रेरणा और प्रोत्साहन दिया। नव लेखकों की विविध विधाओं में लिखी गयी सामग्री को आवश्यक काट-छाँट एवं सुधार-परिष्कार करके उन्होंने प्रकाशित किया और उनका आत्मविश्वास बढ़ाया।

जो ठोस काम हिंदी क्षेत्र में सरस्वती पत्रिका के संपादक आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने किया था, वही काम केरलीय हिंदी पत्रकारिता को समृद्ध करने की दिशा में पिल्लैजी ने किया है। सच्चे आर्थ में वे केरलीय हिंदी पत्रकारिता के भीष्माचार्य रहे हैं। विविध विषयों पर, मुख्यतया भाषा, साहित्य और संस्कृति से जुड़े विषयों पर उनके द्वारा लिखित आलेख, टिप्पणियाँ आदि ने हिंदी क्षेत्र के विविध पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होकर पाठकों का ध्यान आकर्षित कर लिया है। सामाजिक विषयों पर लिखी उनकी कविताएँ भी काफी मात्रा में प्रकाशित हुई हैं। 'केन्द्रीय हिंदी संस्थान, मानव संसाधव विकास मंत्रालय, भारत सरकार' ने 'गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार' देकर उन्हें सम्मानित किया है।

पिल्लै साहब से मेरे परिचय की शुरुआत करीब चार दशक पूर्व से होती है। जब मैं 'ब्रन्नन कॉलेज, तलश्शेरी' से तबादला पाकर तिरुवनन्तपुरम आ गयी तो केरल की प्रतिष्ठित संस्था 'केरल हिंदी प्रचार सभा' के साथ का मेरा सरोकार सुदृढ़ हो गया। मुझे अब भी याद है पिल्लै साहब के साथ मेरी प्रथम मुलाकात की। एक दिन मैं कोई सामग्री 'केरल ज्योति' में प्रकाशनार्थ देने सभा गयी थी। मेरा इरादा केवल उसे सभा के कर्मठ मंत्री एवं मेरे लिए सम्माननीय श्री.एम.के.वेलायुधन नायर जी को सौंपकर वापस आना था। मंत्री के कमरे में मैं प्रविष्ट हो गई तो सहज मुस्कुराहट के साथ नायर जी ने मेरा स्वागत किया और मलबार सेवा पूरा कर तिरुवनंतपुरम लौटआने पर मुझे बधाई दी। उस कमरे में मंत्री के सम्मुख बैठे एक शानदार व्यक्तित्व ने मेरा ध्यान हठात् आकर्षित कर लिया। खादी की पोशाक-जूबा और धोती-पहने, चश्माधारी एक हँसमुख हस्ती। मैंने सोचा कि कोई राजनीतिक नेता होगा या कोई हिंदी सेवी। नायर जी ने हम दोनों का परिचय कराया। पिल्लैजी का नाम मैंने पहले भी सुना था, किंतु देखा था पहली बार। देखते ही उन्होंने मुझे 'केरल ज्योति' में प्रकाशनार्थ कुछ लिखने को कहा तो मैंने तुरंत मेरे हाथ की सामग्री उन्हें सौंप दी। वह मलयालम के प्रख्यात कवि अय्यप्प पणिक्कर के द्वारा भोपाल की यूनियन कारबाइड दुर्घटना पर लिखी गयी "मरणत्तिनप्पुरम्" कविता का 'मृत्यु के उस पार' शीर्षक अनुवाद था। वह पढ़कर पिल्लैजी बड़े प्रसन्न हुए और 'केरल ज्योति' के अगले ही अंक में उन्होंने उसे प्रकाशित भी किया। रचनाकारों को प्रोत्साहित करने की दिशा में वे अपना सानी नहीं रखते थे। उस कविता के प्रकाशनोपरांत जितने ही पत्र संपादक के नाम आए, उन्होंने मुझे दिखाए और मेरा हौसला बढ़ाया।

पिल्लैजी के साथ मिलकर मैंने हिंदी से मलयालम तथा मलयालम से हिंदी में कई कृतियों का अनुवाद कार्य किया है। अनुवाद-कार्य अत्यंत तेज़ गति से करने की उनकी कला गज़ब की होती थी।

भारत सरकार की विविध हिंदी सलाहकार समितियों

में, विशषकर केंद्रीय हिंदी समिति जिसके अध्यक्ष स्वयं प्रधानमंत्री हैं, बतौर सदस्य रहकर उन्होंने अखिल भारतीय स्तर पर हिंदी के प्रचार और शिक्षा को बढ़ावा देने केलिए जो आवाज़ उठायी, उसका लाभ आज की पीढ़ी खूब उठा रही है।

वर्धा में स्थापित 'महात्मा गाँधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय' की विद्या परिषद् में चार साल तक सदस्य रहने का सुयोग उन्हें मिला था। उस दौरान वे, नाम के अनुरूप विश्वविद्यालय की गतिविधियों को ढालने की ओर अधिकारियों का ध्यान आकर्षित करने योग्य सुझाव देकर उनका मार्गदर्शन करते थे। सब कहीं वे हिन्दी के लिए आवाज़ बुलन्द करते थे।

पिल्लैजी का पारिवारिक जीवन भी सीधा-सादा, आदर्श और आनंदपूर्ण था। उनकी पत्नी बड़ी धर्मपरायण नारी और आदर्श गृहणी हैं। गृहकार्य स्वयं संभलकर वे अपने पति को हिंदा सेवा और साहित्य-सृजन केलिए मुक्त कर देती थीं। उनके दो संतानें है। बड़ी बेटी गीता सरकार के कृषि विभाग में ऊँची अधिकारी हैं तथा बेटा विवेकानंदन हिंदी में पीएच.डी उपाधिकारी अध्यापक हैं।

सदैव साहित्य-सृजन में आमग्न रहकर आनंद पानेवाले पिल्लैजी अपनी अंतिम विदाई के चंद दिन पहले तक लेखन-कार्य में जुटे रहे थे। उनकी बिदाई से केरल का हिंदी प्रचारात्मक तथा सृजनात्मक संसार, खासकर पत्रकारिता का संसार एक अपार क्षति महसूस कर रहा है। सचमुच बालकृष्ण पिल्लैजी हिंदी सेवियों केलिए आदर्श की प्रतिमूर्ति हैं। हिंदी की उस महान विभूति को भावभीनी श्रद्धांजलि!!

◆ पूर्व प्रोफसर एव अध्यक्षा
हिन्दी विभाग, केरल विश्वविद्यालय
तिरुवनन्तपुरम - 695 581

सही उत्तर चुनें

1. महात्मा गाँधी का पूरा नाम क्या है?

(अ) महात्मा करमचन्द गाँधी

(आ) मोहनदास पूरनचंद गाँधी

(इ) हरिहर मोहन गाँधी

(ई) मोहनदास करमचन्द गाँधी

2. महात्मा गाँधी का जन्म वर्ष कौन-सा है?

(अ) 1885

(आ) 1869

(इ) 1870

(ई) 1874

3. 'पोरबंदर' किस नाम से भी जाना जाता है?

(अ) सुदामा पुरी

(आ) पोरसुखाय

(इ) कुचेल नगर

(ई) गुजरात गली

4. महात्मा गाँधी की पत्नी का नाम क्या है?

(अ) कमला मुखर्जी

(आ) कस्तूरबा मुखर्जी

(इ) सुखदा देवी

(ई) कमला देवी

5. गाँधी जी की हत्या कब हुई?

(अ) 14 सितंबर 1949

(आ) 26 जनवरी 1950

(इ) 14 नवंबर 1947

(ई) 26 जनवरी 1948 **(शेष पृ.सं. 33)**

श्री के.जी. बालकृष्ण पिल्लै- अनुपम व्यक्तित्व

♦ एस. चंद्रिका वेलायुधन नायर

श्री के.जी. बालकृष्ण पिल्लै का जन्म आलप्पुष़ा जिले के कार्तिकपल्लि मंडल के चिंगोली गाँव में 19-02-1934 को हुआ था। माताजी प्राथमिक विद्यालय की अध्यापिका तथा पिताजी लेखाकार थे। इनकी चार संतानों में बड़े थे पिल्लैजी। उनके व्यक्तित्व विकास में पारिवारिक जीवन का बड़ा महत्व था। छोटी-सी अवस्था से लेकर माताजी ने रामायण, महाभारत तथा अन्य पौराणिक कथायें सुनायीं। पिताजी भी गाँधीवादी, हिंदी प्रेमी तथा अनन्य भक्त थे। कहा जाता है कि वे अंतिम समय में 'हरिनाम कीर्तनम्' जपकर ही स्वर्ग सिधार गये।

पिल्लैजी की अर्द्धांगिनी भी उन्हींके गाँव की है। उनका पारिवारिक जीवन बड़ा संतृप्त था। बेटी कृषि-विज्ञान के क्षेत्र में है और बेटा हिंदी अध्यापक है। दोनों पिताजी के आदर्शों का पालन करके उन्हीं के पद-चिह्नों का अनुगमन करनेवाले हैं। आजकल उनकी अर्द्धांगिनी श्रीमती सरोजिनी अपने बेटे विवेकानंद के साथ पेरूरक्कड़ा में रहती है।

पिल्लै जी के परिवारवाले करुवाट्टा स्वामी के बड़े भक्त थे। करुवाट्टा आश्रम के सन्यासी ने ही इनका विद्यारंभ करवाया था। दसवीं पास होकर हरिप्पाटु कुट्टन पिल्लै के विद्यालय में हिंदी पढ़ने गये। तीन साल के अंतर्गत त्रावंकूर विश्वविद्यालय के 'हिंदी विद्वान' तक की परीक्षायें पास कीं। अगले दिन ही मुतुकुळम एस.आर.एम.स्कूल में हिंदी अध्यापक के रूप में उनकी नियुक्ति हुई। इसके बाद चार साल तक आस-पास के विद्यालयों में हिंदी अध्यापक के पद पर काम किये। इसी समय अजमीर इंटर भी पास किये। कृषि विभाग में लिपिक की नौकरी मिली। हरिप्पाटु से वे तिरुवनन्तपुरम आये। तिरुवनंतपुरम में 'केरल हिंदी प्रचार सभा' के संस्थापक श्री के.वासुदेवन पिल्लै जी से मिले और 'साहित्यरत्न' की पढ़ाई के लिए भर्ती हो गये। यह उनके जीवन के लिए बड़े परिवर्तन का काल सिद्ध हुआ। व्यक्तित्व तथा साहित्यिक विकास का पथ खुल गया। साहित्यिक संगोष्ठियाँ, वाद-विवाद, आलेख- प्रस्तुति, नाटकाभिनय, चर्चाएँ, रेडियो नाटक आदि में भाग ले सके। इसी बीच श्री के.वासुदेवन पिल्लैजी के निर्देशानुसार आगरा में 'हिंदी शिक्षण निष्णात' में भर्ती हो गये।

आगरा की पढ़ाई के बारे में उन्होंने लिखा है- "श्रेष्ठ अध्यापक। इनसे हिंदी पढ़ने का अवसर भाग्य की बात है।" वहाँ के.एम. संस्थान के सायंकाल कोर्स में दाखिला लेकर डिप्लोमा इन हिंदी पोएटिक्स (Diploma in Hindi Poetics), फोनोलजी तथा स्पीच ट्रैनिंग (Phonology and Speech Training) जैसी

परीक्षायें पास कीं। आगरा के वातावरण का बड़ा प्रभाव उन पर पड़ा। आम जनता से , पड़ोसियों से, रामायण पारायण से, सत्संग से तथा कवि सम्मेलनों से बहुत कुछ पढ़ने को मिला। अंग्रेज़ी की पढ़ाई ज़ारी रखने की इच्छा हुई। भगलपुर विश्वविद्यालय के एम.ए.क्लास में भर्ती हो गये। लेकिन पूरा नहीं कर पाया।

तिरुवनंतपुरम लौट आकर 'केरल हिंदी प्रचार सभा' की मासिक पत्रिका 'केरल ज्योति' पत्रिका के संपादक बने। करीब तीस साल तक उसका संपादन इन्होंने किया। पत्रिका उत्तर भारत के लेखकों को भी आकर्षित करने में सक्षम निकली। उन दिनों 'केरल ज्योति' का नाम भारत भर की हिंदी सेवी संस्थाओं तथा हिंदी के पाठकों में जम गया था।

अब लेखक के रूप में के.जी.बालकृष्ण पिल्लैजी का योगदान देखें - अध्यापक बनते ही हिंदी कहानियों का अनुवाद करते थे और उसका प्रकाशन 'प्रमोदम' नामक मासिक पत्रिका में निकलता था। बाद में 'संतवाणी' के लिए लेख तथा कविताएँ लिखीं। अनुभव संपन्न भाषाप्रेमी की वज़ह से हिंदी, अंग्रेज़ी तथा मलयालम में लिखते थे और अनुवाद भी करते थे। रेलगाड़ी में चार दिनों का उनका यात्रा-विवरण 'मलयाल राज्यं' में प्रकाशित है। श्रीमती मृदुला गर्ग के उपन्यास 'कठ गुलाब' का अनुवाद डॉ.एस.तंकमणि अम्मा से मिलकर किया। तुंचत्तु एषुत्तच्छन के 'हरिनाम कीर्तनम्' का हिंदी अनुवाद प्रो.डी. तंकप्पन नायर से मिलकर किया। ड़ॉ. टी. शान्तकुमारी से मिलकर मलयालम की 'दि लिट्टिल सैकिस्ट' नामक पुस्तक का अनुवाद हिंदी में किया। प्रो.एन.कृष्ण पिल्लै के 'भग्नभवनम्' नाटक तथा श्री.सी.राधाकृष्णन के 'तीक्कटल कटञ्ञ तिरुमधुरम्' का भी उन्होंने अनुवाद किया था। हिंदी के समकालीन पत्र-पत्रिकाओं के लिए छः सौ से अधिक मौलिक कविताएँ तथा लेख लिखे हैं। अनूदित तथा प्रकाशित कविताओं की संख्या भी बहुत है। ओ.एन.वी. कुरुप, एन.वी. कृष्णवार्यर, डॉ. अय्यप्प पणिक्कर, महाकवि एम.पी.अप्पन, श्रीमती सुगतकुमारी आदि उत्तम श्रेणी के मलयालम कवियों की कविताओं का भी अनुवाद किया। वयला वासुदेवन पिल्लै जी के नाटक 'अकत्तारो', 'आण्टुबलीट', 'उटंपटी' आदि नाटकों का हिंदी अनुवाद डॉ. एस.तंकमणि अम्मा के साथ किया। मराठी भाषा की ज्ञानेश्वरी के गीताव्याख्यान का अनुवाद डॉ.तंकमणि अम्मा के साथ हिंदी में किया।

आकाशवाणी के लिए मलयालम फ़ीचर, कविताओं का हिंदी में अनुवाद आदि किये। इसके साथ विभिन्न मासिक पत्रिकाओं के लिए अंग्रेज़ी में भी कुछ लेख लिखे।

केरल के मुख्य भाषा प्रेमी तथा साहित्य प्रेमी श्री के जी.बालकृष्ण पिल्लै त्रिभाषा पंडित मात्र नहीं, संस्कृत का भी उन्हें ज्ञान था। 'केरल हिंदी प्रचार सभा' के लिए उनका योगदान बाहर के लोग शायद भूल जायेंगे। लेकिन सभा कभी नहीं भूलेगी। वे सभा के स्पंदन का भाग है। सभा के विकास के हर पग में इनका योगदान रहा।

उनकी सामाजिक सेवा-कार्य के बारे में न बताने पर उनका व्यक्तित्व-लेखन अधूरा रहेगा। लिट्टेररी फोरम (Literary Form) ग्रंथशाला संघ, कानफेड, स्टेट रिसोर्स सेन्टर आदि के विभिन्न पदों में रहकर कर्मक्षेत्र सक्रिय बनाया। साक्षरता, प्रौढ़शिक्षा, अनौपचारिक शिक्षा आदि से संबद्ध थे। साक्षरता पाठावली के अतिरिक्त चेरि उणरुन्नु, घर तथा पढ़ाई, मद्य ज़हर है, कबीर बोलता है, मद्य हमें नहीं चाहिए, टैगोर बोलता है, गुरु नानाक बोलता है, महात्मा बुद्ध बोलता है - नवसाक्षरता के लिए ऐसी पुस्तकों की रचना की।

असल में पिल्लैजी सरकारी नौकर थे। लिपिक के रूप में शुरूकर वेल्लायणी कृषि महाविद्यालय के वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी बन गये। वहाँ से तृश्शूर कृषि विश्वविद्यालय के संयुक्त कुल सचिव के पद से सेवानिवृत्त होकर 'केरल हिंदी प्रचार सभा' के स्नातकोत्तर विभाग में करीब बीस साल तक पढ़ाया। साथ-साथ सामाजिक कार्य भी करते रहे।

भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालयों में हिंदी सलहकार समिति के सदस्य थे। 'केन्द्रीय हिंदी समिति, भारत सरकार', 'शास्त्र परिषद्', 'केंद्रीय हिंदी संस्थान आगरा', 'विद्या परिषद्', 'महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा' आदि के सदस्य थे। जहाँ भी गये वहाँ अपने अलग व्यक्तित्व की छाप लगायी।

सरकार तथा संस्थाओं ने पुरस्कारों से भी उन्हें धन्य बनाया। गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार (आगरा) आचार्य पी.जी वासुदेव पुरस्कार, केंद्रीय हिंदी संस्थान का पुरस्कार, केरल हिंदी प्रचार सभा का 'कवियूर शिवराम अय्यर पुरस्कार' आदि उनमें कुछ हैं।

श्री के.जी.बालकृष्ण पिल्लैजी का अपना व्यक्तित्व है। वे कभी धन के पीछे या पुरस्कार के पीछे नहीं गये। बड़े गाँधीवादी चिंतक थे। मानवीय मूल्यों की कद्र करनेवाले थे। लेकिन बड़े हठी थे। कभी भी अपनी बात को टाल नहीं सकते थे। परिस्थिति के अनुसार थोड़ा-सा बदलना है, किन्तु वे बदलते नहीं थे। हमारेलिए वे सबके बड़े हितैषी थे। पारिवारिक बातों की हो या बच्चों की हो, दूसरे पिल्लैजी से सलाह लेते थे। उनका मत ही मेरे पतिदेव के लिए भी अंतिम निर्णय था। चिंतन तथा सेवा के क्षेत्र में वे बड़े संपन्न थे। ऐसे महानुभाव के प्रति मैं श्रद्धांजली अर्पित करती हूँ।

वे एक लंबे अर्से तक 'केरल हिंदी प्रचार सभा' की कार्यकारिणी समिति के सदस्य रहे थे। हिंदी प्रचार सभा के प्रगतिपथ को तीव्रगामि बनाने में उनके सुझाव का बड़ा स्थान था। 'केरल हिंदी प्रचार सभा' के उपाध्यक्ष के रूप में तथा अध्यक्ष के रूप में उनका योगदान बेजोड़ था।

योग में उनका बड़ा भरोसा था। वे बड़े योगी थे। प्रकृति-चिकित्सा पर भी उनका बड़ा विश्वास था। वे हमेशा प्रकृति चिकित्सा को प्रोत्साहन देते थे। सभी दिशाओं से देखने पर उनका जीवन मानवीय मूल्यों से संपुष्ट था।

♦ पूर्व अध्यापिका, केन्द्रीय विद्यालय।
सदस्या, कार्यकारिणी समिति
केरल हिन्दी प्रचार सभा
तिरुवनन्तपुरम।

स्वर्गीय के.जी.बालकृष्ण पिल्लै की रचनाएँ

स्वर्गीय के.जी.बालकृष्ण पिल्लै का साहित्यिक व्यक्तित्व बहुआयामी है। उनकी रचनाएँ - कविता, लघुकथा, फीचर, शोध लेख आदि - भारत के विविध हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित हैं। पिल्लै जी ऐसे केरलीय हिन्दी लेखक हैं, जिनकी रचनाएँ अपेक्षाकृत अधिक विविध पत्र-पत्रिकाओं में निकली हैं। पत्रिकाओं में प्रकाशित उनकी कुछ रचनाएँ नीचे दी गयी हैं।

कविता

कविता से

प्रिय कविते!
तू सजधज के
अपने सुकुमार अंगो की
तरुण झाँकी मात्र दिखा के
क्षण प्रभा-सी
क्षण भर में
कहाँ गायब हो गयी?
कब से मैं तुझे ढूँढ़ रहा हूँ
तेरी
आजानुविलंबित केशराशि की
मादक गंध
झनक - झनक करते
तेरी पायलों की
मधुर झंकार
कहीं से आती प्रतीत होती है
कहाँ छिपी है तू?

(तलाशी, अगस्त 1994)

कुसंग

खून की प्यासी
मादा - मच्छरों के संग रहने के कारण
निर्दोष मर्द - मच्छर भी
जो कि
पूर्णतः शाकाहारी हैं
इनसान के
दुश्मन माने जाते हैं
और इनसान से
तंग किये जाते हैं
मारे जाते हैं।

('महावाणी' पत्रिका, रायबरेली; सितंबर 1998)

जन को आज जगा देना है

आज यहाँ तो ईमानदारी बेवकूफी मानी जाती।
कर्जा लेकर खर्च बढ़ाते, मुद्रास्फीति बढ़े दिन - दिन ।।
नये-नये कर लिये जा रहे, किन्तु बजट घाटे पर ही।
जगह - जगह पर जन जाता है, व्यर्थ नैचुरल ग्यास अहा।।
घर - घर में भोजन पकने को, ईधन कहाँ मिले?
बेशुमार कटते जाते हैं, वन के वृक्ष अनेक।।
नेताओं की ऐयाशी पर, खर्चा बढ़ जाता है।
जनता के कल्याण-कार्य पर खर्चा घट जाता है।।
छोटे-छोटे व्यवसायी से, होटल वाले तक।
चीज़ों का दाम बढ़ा - बढ़ा कर लूटे जनता को।।
नेताओं पर धाक जमाते, तांत्रिक, धर्म गुरु।

मन्दिर मस्जिद गुरुद्वारे पर सेना का पहरा।।
जन प्रतिनिधि जाने अपने को सचमुच शाहं शाह।
वेतन भत्ता पेंशन लेना, उनका जीवन लक्ष्य।।
निजी निवासों में स्विमिंग पूल, बनवाते नेता।
जनता के पैसे पर सारी साज-सजावट है।।
कुंभकर्ण की निद्रा में है, डूब चुकी जनता।
उसको आज जगा देना है, कवियों का सत्कर्म।।

(वीर मुलाका, 1 दिसंबर 1991)

साक्षरता

थाने की एक महिला से
किसी प्रौढ़ शिक्षाकर्मी ने पूछा - आप
इस ढलती आयु में
क्यों अक्षर सीख रही हैं?
महिला ने सकुचाते हुए कहा -
हसबैंड़ को
उनकी गेर्लफ्रेंड़ों से
जो प्रेमपत्र प्राप्त होते हैं
उन्हें पढ़ लेने के लिए ताकि
उनको टोक सकूँ, और हाँ,
हसबैंड़ की पे-स्लिप
पढ़ लेने के लिए ताकि
वेतन की असली रकम
मुझसे छिपायी न जा सके!

('संयोग साहित्य' पत्रिका, जुलाई-दिसंबर 2006)

जनतंत्र का तंत्र

जनतंत्र का यह तंत्र है कि
पैसेवालों की अनियमितताएँ
राजनेताओं की अनियमितताएँ
विधेयकों - अधिनियमों के माध्यम से
भूतलक्षी प्रभाव से
नियमित की जा सकती है।

('समाज प्रवाह' पत्रिका, जुलाई 2006)

हाईकु

1. साँप-साँप को
   निगल रहा हो तो
   बचाएँ किसे?
2. तलाक बाद
   पशु क्या रहे हैं
   पत्नी व पति?
3. उदित होते
   क्यों हस्त हो गया है
   आज सूरज?
4. हृदय हमेशा
   बोझ बहुत भारी
   वहन कैसे?
5. अंधकार को
   डरावना बनाता
   झिली - झकार।
6. खोलो सिड़की
   दम घुटता जाता
   पवन आए।
7. जिल्द न रही
   पन्ने छिन्न-भिन्न हैं
   किताब कहाँ?
8. पुराने पत्र
   भादों के पुलिन्दे हैं
   भीगे अस्पष्ट।

9. नदी निकली
सागर में जा मिली
विनाश या विकास?

(अरबी माला, 7-12-2006)

व्यंग्य

एक निवेदन, प्रधानमंत्री से

सामान्यतः नगरपालिकाओं से यह अपेक्षा की जाती है कि वे नगरों की सफ़ाई का प्रभावी प्रबंध करें। इसके लिए कर्मचारी भी नियुक्त किए जाते हैं। कर्मचारियों की निगरानी करने के लिए स्वास्थ्य अधिकारी भी नियुक्त किए जाते हैं। पर इन सब व्यवस्थाओं के बावजूद हम पाते हैं कि प्रायः हमारे नगरों में जगह - जगह कूड़े - करकटों के अंबार लगे हुए हैं। सड़क के दोनों तरफ नालियों में जो गंदगी भरी रहती है, उससे बड़ी बदबू निकलती है। इस गंदे वातावरण में नगर की गलियाँ मच्छरों - मक्खियों का प्रजनन केन्द्र बन जाती हैं और इन जीवों द्वारा तरह - तरह के संक्रामक रोग फैलते हैं, जैसे - चिकनगुनिया, एच-1, एन-1, मलेरिया, जापान ज्वर इत्यादि।

जब किसी समारोह का उद्घाटन करने या चुनाव प्रचार अभियान में भाग लेकर भाषण देने आदि के लिए कभी प्रधानमंत्री का दौरा किसी नगर विशेष में होना निश्चित हो जाता है तो सारा प्रशासन तंत्र एकदम सजग हो जाता है। इसका चमत्कारी प्रभाव एक छात्र के मुँह से कहलवाया गया है -

"प्रधानमंत्री जी! आपके आने से कितना साफ - सुथरा हो गया हमारा शहर। दिन - रात गंधाते कूड़ों के ढेर गायब हो गए। राह किनारे से चूने की किनारियाँ वाली सड़कें कितनी खुशनुमा दिखने लगीं कि मानो किसी धोबी ने खूब मेहनत से धोकर सफेद किनारी वाली काली साड़ियाँ फैला दी हों बीच नगर में।"

कई भारतीय शहर ऐसे हैं जहाँ अभी बिजली और पानी की आपूर्ति पर्याप्त मात्रा में नहीं हो पाती है। शहरों में जब करंट कट हो जाता है तो फिर सड़कों पर समाजविरोधी तत्वों का साम्राज्य छा जाता है। महिलाओं के गले से सोने की मालाएं तोड़ ली जाती हैं। राह चलती महिलाओं के साथ अभद्र व्यवहार होता है। सबसे बड़ी कठिनाई उन छात्रों की हो जाती है, जो सालाना इम्तिहान की तैयारी में लगे रहते हैं। आजकल के बच्चे बिजली की रोशनी के इतने अभ्यस्त हो गए हैं कि बिना बिजली की बत्ती के, वे रात को पढ़ ही नहीं पाते।

खैर, जब किसी शहर में प्रधानमंत्री के दौरे का कार्यक्रम बन जाता है, तो वहाँ बिजली की आपूर्ति में कोई कसर नहीं रह जाती।

यही हाल पानी की आपूर्ति का भी है। नगरों में जब दिनों के लिए पानी की आपूर्ति रुक जाती है तो नगरवासियों का जीवन कितना दूभर हो जाता है, इसका आभास भुक्तभोगी ही कर सकते हैं। न भोजन पकाने का पानी, न प्यास मिटाने का पानी। न नहाने - धोने का पानी। शौच के लिए भी एक बूंद पानी नहीं। पुराने जमाने में तो खैर कुएँ थे, तालाब थे। पर सभ्यता के विकास के साथ ये सब भर दिए गए। अब नल का पानी बंद, तो सारा जीवन ठप।

हाँ, यदि प्रधानमंत्री का दौरा किसी नगर में हो जाए, तो वहाँ जल की आपूर्ति की पूरी - पूरी व्यवस्था होती है।

इसलिए छात्र कहता है-

अटूट बिजली थी
नलों में अबाध पानी था।
छात्र का अनुरोध है -
प्रधानमंत्री अंकल!
आप ज़रा जल्दी - जल्दी आया करो न।
और हाँ! इम्तिहान की तैयारी के दिनों में जरूर -
जरूर आना आप।

(हिन्दी मिलाप, 7 अगस्त 2011)

फीचर

वृद्धावस्था में लाभदायक है योग

हमारे मन में यह भ्रामक धारणा घर कर गई है कि योग का अभ्यास केवल बच्चे या युवक ही कर सकते हैं। क्योंकि उन्हींका शरीर इतना लचीला रहता है कि योगासनों के अभ्यास के लिए विविध प्रकार से उसे मोड़ सकते हैं। वृद्धावस्था तक आते - आते शरीर का लचीलापन खत्म हो जाता है। संधियों या जोड़ों में एक प्रकार से कड़ापन आ जाता है जिस कारण पद्मासन, पाद्हस्तासन आदि का अभ्यास एक पकार असंभव-सा हो जाता है। यह भ्रामक धारणा इस गलत धारणा से बनती है कि योग का मतलब ही योगासन है और 'योगासन' शब्द सुनने पर हमारे मन में पद्मासन या शीर्षासन आदि का अभ्यास करनेवालों के चित्र उभर आते हैं। फलस्वरूप हमारे वृद्ध जन योगाभ्यास के लिए प्रायः तैयार नहीं होते। हमें इस धारणा को सुधरना है। योग में आसन तो हैं पर योग केवल आसन ही नहीं है। योग के और भी अंग हैं जैसे - प्राणायाम, ध्यान इत्यादि, जिनका अभ्यास वृद्धावस्था में बड़ी सरलता से किया जा सकता है। एक प्रकार से देखें तो वृद्धावस्था योगाभ्यास के लिए अपेक्षाकृत अधिक अनुकूल है, क्योंकि इसी अवस्था में हमें इन सब बातों के लिए पर्याप्त समय और अवकाश मिल जाता है। गृहस्थी के सामान्य झंझटों से हम मुक्त हो रहते हैं। व्यस्तता कम रहती है। जो लोग विविध प्रकार के कठिन आसनों के अभ्यास से डरते हैं उन्हें यह सुनकर तसल्ली मिलेगी कि कुर्सी पर बैठे - बैठे भी आज कल योग का अभ्यास किया जा सकता है। महर्षि पंतजलि ने आसन के संबंध में इतना ही कहा है कि 'स्थरं सुखं आसनम' यानी थोड़ी देर तक आराम से बैठने की आदत डालना ही आसान है। जो लोग घुटनों के दर्द के कारण पदमासनं में नहीं बैठ सकते, वे साधारणतयाः हम जिस प्रकार भोजन करने के लिए फर्श पर बैठते हैं, वैसे भी बैठकर प्राणयाम, ध्यान इत्यादि का अभ्यास कर सकते हैं इसे 'सुखासन' कहते हैं। वैसे तो वृद्धावस्था में उच्च रक्तचाप, मधुमेह, दिल के रोग, टी.बी. जैसे रोगों से हमारा शरीर ग्रस्त हो जाता है। अनावश्यक उत्कंठाओं और अकेलेपन की व्यवस्थाओं के कारण हमारा मन भी प्रायः अशान्त बन जाता है।

जगद्गुरु शंकराचार्य ने भी कहा है - 'वृद्ध स्वावत् चिन्ता मग्न'। यानी वृद्धावस्था में तरह - तरह की चिंताओं में हमारा मन डरता है। यहाँ तक कि कुछ लोगों को आधी रात तक नींद नहीं आती और कुछ लोग सुबह दो बजे ही जाग जाते हैं। फिर नींद न आने के कारण रात को शेष समय बिताना उनके लिए बहुत कठिन हो जाता है। कोई - कोई स्लीपिंग पिल्स का आश्रय लेते हैं। जिन वृद्धजनों के पास अधिक अवकाश है उनसे मेरा अनुरोध है कि वे निकट के किसी योगाचार्य से मिलकर इस संबंध में चर्चा करें। सुखासन में बैठकर प्राणायाम करना और ध्यान करना सीखें।

आप के पास जितना अधिक समय है उतना अच्छा। यदि किसी कारणवश आप वृद्धावस्था में भी, अतिव्यस्त हैं तो भी आप आधा घंटा तो अपने शरीर और मन के स्वास्थ्य के लिए ले ही सकते हैं। लेना ही चाहिए न? ध्यान की अवस्था में हमारी पीनियल ग्रंथि अधिक सक्रिय होती है और मेला टोनिन होरमोन का अधिक निर्माण करती है। इससे हम बुढ़ापे के कई रोगों से बच सकते हैं।

(उत्तर उजाला, नैनीताल; 10-10-2012)

गाँधीजी के सपने का भारत कैसे बनाएँ?

हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने जिस प्रकार के स्वतंत्र भारत का सपना देखा था उस प्रकार के भारत का निर्माण करना हम सबका, विशेषकर हमारे निर्वाचित जनप्रतिनिधियों का लक्ष्य होना चाहिए? यदि उस लक्ष्य तक कभी पहुँचना हो, तो हमारा हर कदम उसी लक्ष्य की ओर होना चाहिए। गाँधीजी के जन्म दिवस के इस पुनीत अवसर पर इससे संबंधित कुछ पहलुओं पर नजर डालना उचित ही होगा।

21-1-1925 को गाँधी जी ने 'यंग इंडिया' में लिखा, "एक न्यूनपक्ष की अधिकार-प्राप्ति से यथार्थ स्वराज्य की प्राप्ति नहीं होगी। वह तभी प्राप्त होगी जब अधिकार के दुरुपयोग का विरोध करने की क्षमता सब में विकसित हो।" ज़रा सोचिए। क्या यह क्षमता हमारे सभी नागरिकों में विकसित हो सकी है? अधिकार का दुरुपयोग तो होता ही है। पर इसका विरोध हममें से कितने नागरिक कर पाते हैं? विरोध करने के लिए आवश्यक समझ और साहस उत्पन्न करने के लिए क्या - क्या उपाय अपनाए जा सकते हैं?

24-8-1947 के यंग इंडिया में गाँधीजी ने लिखा - अहिंसा पर अधिष्ठित स्वराज में कोई किसी का शत्रु नहीं रहेगा। आम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सभी अपनी - अपनी भूमिका अदा करते हैं। सब को पढ़ना लिखना आता है। सब का ज्ञान दिनोंदिन विकासमान होता जाएगा। रोग - अस्वास्थ्य न्यूनतम रहेगा। कोई निर्धन नहीं रहेगा। मज़दूरों को जब चाहे रोज़गार मिलेगा। ऐसी एक शासन व्यवस्था में जुआ, मद्यपान, कदाचार, वर्ग-वैर इत्यादि का कोई स्थान नहीं। धनी अपने धन का दुर्व्यय आडंबरों और लौकिक सुख भोगों के लिए न करके उसका सदुपयोग बुद्धिपूर्वक करेंगे ऐसी स्थिति न हो जिसमें इने-गिने धनी रत्न जड़ित महलों में निवास करें और करोड़ों को ऐसी झोंपड़ियों में निवास करना पड़े जिसमें न प्रकाश आता है, न हवा। अहिंसा पर अधिष्ठित स्वराज में किसी के न्याययुक्त अधिकार पर अतिक्रमण नहीं होगा। न ही किसी को अन्याययुक्त अधिकार प्राप्त होंगे।

उपर्युक्त आदर्श स्थिति से हमारे वर्तमान भारतीय समाज की तुलना कीजिए। गाँधीजी के लक्ष्य तक पहुँचने के लिए हमें कितनी दूरी तय करनी पड़ेगी। हमारे वैज्ञानिक राष्ट्रपति डॉ.ए.पी.जे.अब्दुल कलाम सन् 2020 तक भारत को विकसित देशों की कोटि में प्रतिष्ठित करने का सपना संजोए हुए हैं। हमारे अर्थशास्त्री प्रधानमंत्री यह विश्वास दिलाया करते हैं कि अगले पाँच - दस सालों में देश की आर्थिक दशा सुधर जाएगी। दोनों ने मिलकर भारत के नव निर्माण की परियोजनाओं की भी मूर्त रूप दिया है। क्या ये परियोजनाएँ देश को वह स्वरूप प्रदान कर पाएँगी जिस का सपना राष्ट्रपिता ने पाला था?

हर बात के लिए सरकार को ही दोषी क्यों

ठहराएँ? क्या हम नागरिकों में हर कोई भारत के नवनिर्माण के आम लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अपनी-अपनी भूमिका अदा कर रहा है? हममें कितने ऐसे हैं जो स्वार्थ से परे कभी सोच पाते हैं? क्या पाँच - दस सालों में हमारा देश शत प्रतिशत साक्षर हो पाएँगा?

वर्तमान स्थिति यह है कि जितने लोग इस देश में स्वतंत्रता-प्राप्ति के समय थे यानी करीब तैंतीस करोड़, उतने ही लोग आज यहाँ निरक्षरता में जिए जाते हैं। सब के लिए स्वास्थ्य का नारा कब यथार्थ हो जाएगा। अब एड्स की विभीषिका भी आ धमकी है। सबको रोज़गार की गारंटी देने की कोई योजना अभी तक बनी ही नहीं। मद्यपान इतना बढ़ रहा है कि हाल ही में एक कुलपति को स्वीकार करना पड़ा कि छात्रसंघ के निर्वाचन में उनके कुछ छात्र मतदान के बदले शराब मांगते रहे थे।

धन का दुर्व्यय देखना हो तो पंचतारा होटलों में देखिए। क्या महानगरों की झोंपड़ियों के निवासियों को पाँच - दस सालों में आवास योग्य मकान मिल पाएँगे? राजनीति और मजहब के नाम पर नही हुई शत्रुता का अंत कब तक हो पाएगा?

(तरुणदेश, भीलवाड़ा; 27-09-2005)

निरक्षरता का लज्जाजनक अभिशाप

कुछ वर्षों से युनेस्को के आह्वान पर हर 8 सितम्बर को 'विश्व साक्षरता दिवस' मनाया जाता है। भारत जैसे जिन राष्ट्रों में निरक्षरता का घोर अंधकार घनीभूत रूप में छाया है उन राष्ट्रों के नागरिकों में निरक्षरता को जड़ से उखाड़ देने की प्रेरणा जगाना ही इस दिवस को मनाने का उद्देश्य रहा है।

कुछ राष्ट्रों ने इस संदेश को सही रूप में ग्रहण किया और ऐसा प्रभावी अभियान चलाया कि वे पूर्ण रूप से साक्षर बन गए और हम हैं कि आज कुल जनसंख्या के करीब पैंतीस प्रतिशत को यानी पैंतीस करोड़ नागरिकों को निरक्षरता के अंधकार से मुक्ति नहीं दिला पाए हैं और हम सपना देख रहे हैं 2020 तक विकसित देशों की कोटि में स्थान पाने का।

कई अध्ययनों ने यह प्रमाणित किया है कि विकास और साक्षरता का गहरा संबंध है। जो देश जितना अधिक निरक्षर है वह विकास में उतना ही पिछड़ जाता है। उलटे, जो देश जितना अधिक साक्षर है वह देश उतनी ही तीव्रता से विकास की सीढ़ियाँ चढ़ता जाता है। भारत के विभिन्न राज्यों की स्थिति का अध्ययन ही इस तथ्य को स्पष्ट रूप से दर्शाता है। केरल जो संपूर्ण साक्षर राज्य है, मानव जीवन की गुणवत्ता के मापदंडों के आधार पर अग्रणी माना जाता है। बिहार, राजस्थान, मध्य प्रदेश, उत्तरप्रदेश, झारखण्ड जैसे हिन्दी क्षेत्र साक्षरता में कितने पीछे हैं, विकास में भी उतने ही पीछे हैं।

स्त्री-साक्षरता के सकारात्मक प्रभावों के जो आंकड़े 'राष्ट्रीय साक्षरता मिशन' ने अपने अंग्रेज़ी प्रकाशन 'लिटरसी - फाक्ट्स अट ए ग्लान्स' में दिए हैं उन पर ज़रा सरसरी नज़र डालें तो स्पष्ट हो जाएगा कि साक्षरता किस प्रकार विकास में गति लाती है और निरक्षरता कैसे विकास को बाधित करती है।

साक्षर महिलाएँ गर्भावस्था में स्वास्थ्य-रक्षा पर अधिक ध्यान रखती हैं। साक्षर महिलाओं में 91 प्रतिशत ने टेटनेस टोक्साइड़ का इंजेक्शन लिया था जबकि निरक्षर महिलाओं में केवल 54 प्रतिशत ने ही ऐसा किया था। साक्षर महिलाएँ परिवार नियोजन के

तरीकों का लाभ ज़्यादा उठाती हैं। निरक्षर महिलाओं में केवल 42 प्रतिशत ने ही संचार माध्यमों पर प्रसारित परिवार नियोजन संबंधी संदेश सुना या देखा था जबकि साक्षर महिलाओं में 76 प्रतिशत ने यह संदेश पाया था। ध्यातव्य है कि स्वतंत्रता-प्राप्ति के समय भारत की जनसंख्या जो चालीस करोड़ के करीब थी, अब वह बढ़ते - बढ़ते एक सौ करोड़ की रेखा लांघ चुकी है। वह तो सर्वविदित है कि जनसंख्या की यह त्वरित वृद्धि विकास की सारी योजनाओं को परास्त करनेवाला मुख्य घटक रही है। यह भी ध्यान देने की बात है कि भारत की जनसंख्या-वृद्धि के लिए हिन्दी क्षेत्र के वे प्रदेश ज़्यादा ज़िम्मेदार रहे हैं जहाँ निरक्षरता के अड्डे ज़्यादा हैं।

यद्यपि हम इस बात पर गर्व कर सकते हैं स्वतंत्रता -प्राप्ति के बाद हमारे प्रयत्नों से निरक्षता के प्रतिशत में बराबर कमी आई है, तो भी इस पर हमें लज्जा का अनुभव भी होता है कि इन साठ वर्षों में हम पूर्ण साक्षरता के लक्ष्य के निकट कहीं नहीं पहुँच पाए हैं।

रामराज्य के अपने संकल्प की विवेचना करते हुए महात्मा गाँधी ने कभी कहा था कि संसदीय जनतांत्रिक प्रणाली में रामराज्य स्थापित करने का एक ही मार्ग है - संसद में ऐसे प्रत्याशियों को चुन- चुनकर भेजना जो राम के समान सुशिक्षित, सत्यनिष्ठ, धर्मनिष्ठ और जनता के हितचिन्तक हो। ऐसा चुनाव करने में निरक्षर मतदाता किसी भी हालत में समर्थ नहीं हो सकते। भय या लोभ से उन्हें बहकाया जा सकता है न। हमारा जनतंत्र तभी सार्थक हो सकता है जब हम शत प्रतिशत साक्षर बन जाएँ। वर्तमान योजनाएँ इस दृष्टि से अपर्याप्त हैं।

(रांची एक्सप्रेस; 8-9-2007)

कैसी है हमारी दिल्ली?

ऊपर से देखने पर दिल्ली बहुत आकर्षक है, सुन्दर है। ऊपर का शाब्दिक अर्थ ही पहले लें। विमान जब नई दिल्ली के किसी विमान पत्तन पर उतरने लगता है तो नीचे यमुना नदी का चमकता जल प्रवाह और उसकी दोनों तरफ कहीं - कहीं ऊँची - ऊँची अट्टालिकाओं के समूह। बीच - बीच में वृत्ताकार सड़कें और उन्हें जोड़ती हुई अन्य सड़कें, जगह - जगह हरे भरे उद्यान और नीचे उतरने पर सड़कों से बहते छोटे - बड़े वाहन धीमी गति से रेंगनेवाली रेल गाड़ियों दिखाई देते हैं।

जब हम विमान पत्तन पर उतरकर किसी टैक्सी में शहर की तरफ़ निकलते हैं तो सड़कें बहुत ही साफ-सुथरी लगती हैं। नए - नए मॉडलों की मोटरें अपनी-अपनी गति से सड़क नियमों का सही पालन करते हुए आगे बढ़ती हैं, बीच-बीच में ट्रैफिक का लाल सिग्नल पाकर रुकती हैं, हरा सिग्नल पाकर आगे बढ़ती हैं, तो लगता है कि यह सचमुच एक बड़े देश की सुयोग्य राजधानी है।

कनाट प्लेस का शानदार शॉपिंग कांप्लेक्स, राष्ट्रपति भवन, विभिन्न देशों के दूतावास, अतिविशिष्ट व्यक्तियों के सुरम्य पंचतारा होटलों-से आलीशान मकान - ये सब नई दिल्ली की महानता के निशान हैं। पुरानी दिल्ली का लाल किला, जामा मसजिद आदि तो दिल्ली के गत गौरव की स्मृति जगाते है। राजघाट, शान्तिवन आदि तो दिल्ली को पवित्र तीर्थस्थल बनाते हैं। पर जब हम और भी निकट से देखने के लिए दिल्ली के किसी मार्ग पर उतर जाते हैं और पैदल भ्रमण करने लगते हैं तो महसूस होने लगता है कि

दिल्ली उतनी साफ नहीं है जितनी होनी चाहिए। पहले 'सफ़ाई' का शाब्दिक अर्थ ही लें।

झुग्गी झॉपड़ियों की बात कीजिए, जहाँ हर प्रकार की गंदगी का अंबार मिलना स्वाभाविक है। कोई विशाल राजपथ ही लीजिए जैसे 'दीनदयाल उपाध्याय मार्ग'। एक सिरे पर खड़े होकर देखने पर यह मार्ग स्वच्छ सुन्दर दिखाई देगा। पर किसी दिन सुबह करीब छ - सात बजे उस मार्ग से पैदल भ्रमण करें, गाँधी शांति प्रतिष्ठान के सामने से उर्दू घर, राजेन्द्र भवन आदि के निकट से आगे बढ़ेंगे तो कोटला मार्ग और माता सुन्दरी मार्ग के बीच पहुँचने पर इतनी बड़ी दुर्गंध आने लगेगी कि आप नाक- भौंह सिकोड़ने लगेंगे। इतनी अधिक मक्खियाँ भिनभिनाती मिलेंगी कि आप दोनों तरफ़ नज़र उठाकर देखने केलिए बाध्य हो जाएँगे, यह देखने कि ये मक्खियाँ आखिर कहाँ से आ रही हैं।

सड़क की पूरब दिशा में जो विशाल मैदान पौधों की झुरमुटों से भरा मिलेगा, उस पर आप देखेंगे कि झुरमुटों की आड़ में कई बच्चे बूढ़े और जवान पाखाना बैठे हुए हैं।

फुटपाथ पर सोए पड़े गरीब भी इधर-उधर मिलेंगे जिनके मुख पर मक्खियाँ भिनभिना रही होंगी। चावड़ी बाज़ार, नई सड़क जैसी गलियों में घुसिए। साइकिल रिक्शा, टू-व्हीलर, थ्री-व्हीलर, इक्का, पदयात्री आदि की भीड़ से रास्ता बनाते हुए आगे बढ़िए। इधर उधर जो छोटे - छोटे भोजनालय मिलेंगे, उनमें रखे खाद्य पदार्थों पर भी मक्खियों भिनभिनाती मिलेंगी।

दिल्ली की चारित्रिक गंदगी की हम यहाँ चर्चा करना नहीं चाहते। इस भौतिक गन्दगी से हमारे देश की राजधानी को मुक्त करना दिल्ली प्रशासन की, विशेषकर दिल्ली नगर निगम की प्रथम प्राथमिकता होनी चाहिए? सार्वजनिक स्थानों पर पाखाना बैठने पर रोक लगाना तो होगा ही। उसके पहले यह सुनिचित करना होगा कि जिन गरीबों के लिए पर्याप्त निजी शौचालय नहीं हैं। उनके लिए आवश्यक सार्वजनिक शौचालयों का निर्माण किया गया है। ऐसा करने में जितना विलंब होगा, दिल्ली की गन्दगी उतनी ही बढ़ती ही जाएगी और तरह - तरह की संक्रामक बीमारियाँ अड्डा जमा लेंगी।

(दिल्ली परिक्रमा; 27 जुलाई - 2 अगस्त 2005)

वृद्धजनों की ज्ञान संपदा का उपयोग

बताया जाता है कि वार्धक्य का आरंभ वैज्ञानिक प्रगति से स्वास्थ्य रक्षा के क्षेत्र में हो रही सुविधाओं के फलस्वरूप टलता जा रहा है। अब तो साठ साल तक का व्यक्ति जवान माना जाता है। पर इसका अर्थ यह नहीं कि साठवें जन्म दिन के साथ व्यक्ति की सारी शारीरिक व मानसिक क्षमताएँ एक साथ एकदम जवाब दे जाती हैं। कई-कई ऐसे विधुर हैं जो साठ के बाद नया विवाह रचने का साहस करते हैं। कई ऐसे हैं कि सेवा निवृत्ति के बाद मिल रही पेशन की अपर्याप्तता के कारण कहीं कहीं पूर्णकालीन या अंशकालीन नौकरी ढूँढ़ लेते हैं, भले ही वहाँ उनकी विवशता का अनुचित लाभ उठाते हुए कम वेतन पर अधिक काम लेते हैं।

कहने का मतलब यह है कि सठिया जाने के बाद भी कम से कम दस वर्ष तक और काम करने की क्षमता व्यक्ति में शेष रहती है। हाँ, सत्तर साल तक आते-आते कुछ अपवादों को छोड़कर, व्यक्ति किसी न किसी बीमारी से जूझने लगता है। वार्धक्य अपना धावा बोल देता है।

कहा जाता है कि अनुभव बहुत बड़ा गुरु है। वृद्धों के बाल अनेक प्रकार के अनुभवों की धूप में पके होते हैं। इन अनुभवों ने उनमें ज्ञान की विपुल संपदा भर दी है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल जी ने 'चिंतामणि' में संकलित अपने किसी निबंध में लिखा है कि हर तरह की संपदा का या तो सदुपयोग होता है, नहीं तो दुरुपयोग होता है और अन्यथा उसका अनुपयोग होता है। हमारे वृद्धजनों की ज्ञान -संपदा का सदुपयोग सुनश्चित करने के क्या क्या-उपाय हैं, इन पर ज़रा सोचें।

घर से आरंभ करें। वृद्ध माँ - बाप को वृद्ध सदनों में बंद रखने की क्रूर प्रवृत्ति हमारे यहाँ, विशेषकर नगरों व महानगरों में बढ़ती जा रही है। वहाँ उनकी ज्ञान-संपदा का कितना आपराधिक अनुपयोग हो जाता है, इस पर हम बहुत कम सोचते हैं। उच्च शैक्षिक योग्यतावाले विविध सरकारी और गैर सरकारी पदों पर रहकर विविध प्रकार के अमूल्य अनुभव प्राप्त किए हुए व्यक्ति सब वृद्ध सदनों व चार दीवारी में कुछ कर दिखाने के अवसर के अभाव में दम तोड़ रहे हैं?

यदि इनको अपनी-अपनी प्रिय संतान व पौत्रों-पौत्रियों के साथ जीवन की अति संध्या का आनद से बिताने का अवसर दिया जाए, तो उनकी ज्ञान-संपदा का उपयोग संतानें भले ही न करें पौत्र - पौत्रियाँ तो अवश्य कर सकती हैं। बच्चे उनसे पूछ पूछ कर कितनी ही कहानियाँ सुन सकते हैं। अपने स्कूली पाठों से संबंधित कितने ही संदेहों का निवारण कर सकते हैं। जीवन-संग्राम विजयी बनने के कितने ही मंत्र सीख सकते हैं।

जिन घरों में पति-पत्नी दोनों सर्विस करते हैं वहाँ किशोर लड़के - लड़कियाँ जब स्कूल से लौटते हैं तो उनकी हिफाज़त जिस दायित्वबोध के साथ दादा - दादी और नाना - नानी कर सकते हैं उस दायित्वबोध के साथ क्या मामूली नौकर - नौकरानी कर पाएँगे? सामाजिक स्तर पर भी इन वृद्धजनों की अनुभव ज्ञान-संपदा का सदुपयोग जिस भाव में होना चाहिए, हो नहीं पाता। ग्रंथालयों में उनमें से ऐसे लोगों के रविवारीय भाषण रखिए जो किसी विषय विशेष में विशेषज्ञ हैं। स्वैच्छिक संस्थाओं में उनको सलाहकार बनाइए। पंचायतों, नगर पालिकाओं, नगर निगमों आदि की विविध समितियों में उनको सदस्य बनाइए। आस - पड़ोस के एक सौ, दो सौ घरों के पड़ोसी संघ बनाकर उनकी कार्यकारिणी समिति में उनको प्रमुख स्थान दीजिए। तब उनकी ज्ञान-संपदा समाज के काम आने लगेगी। सोचिए, और कौन - कौन से उपाय हैं उनके ज्ञान - दुग्ध का दोहन करने के।

(मेरठ समाचार, मेरठ। 2 सितंबर 2005)

सूर्य नमस्कार - योगासनों का संगम

हाल ही की बात है, कन्याकुमारी के विवेकानन्द केन्द्र में वर्धा स्थित 'महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय' के तत्वावधान में एक त्रिदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित हुई जिसमें भाग लेने का सुअवसर मुझे भी मिला।

संगोष्ठी के दूसरे दिन सुबह करीब साढ़े पाँच बजे ही हम लोग समुद्र के किनारे केन्द्र द्वारा निर्देशित स्थान पर एकत्र हो गए, सूर्योदय देखने। पूर्व दिशा के आकाश में उदीयमान सूर्य की प्रभा धीरे - धीरे विविध वर्णों में दिखाई देने लगी तो हम सब का हृदय आह्लाद से भर गया। चन्द क्षणों में ही सूर्य का अरुण बिंब प्राची के

अंबर पर धीरे - धीरे उभरने लगा तो सब भक्तिभाव से उसकी छटा निहारने लगे।

आवास की ओर लौटते हुए एक बुजुर्ग विद्वान ने कहा, "मैं नियमित रूप से सुबह - सुबह सूर्य नमस्कार किया करता हूँ। तभी तो मैं इस आयु में भी इतना निरोग रह पाता हूँ।"

मेरा भी अनुभव यही है कि सूर्य नमस्कार का नियमित अभ्यास करते रहने से शरीर अपेक्षाकृत निरोग रहता है। इसका कारण शायद यही हो सकता है कि इस व्यायाम में कई योगासनों का सामंजस्य मिलता है।

इसकी प्रक्रिया में दस बारह आसन हैं:

(1) सीधे खड़े रहकर साँस लेते हुए सूर्य को प्रणाम करना।
(2) साँस छोड़ते हुए आगे झुककर पाँवों को छूना।
(3) दाएँ पाँव को पीछे की ओर तानते हुए बाएँ घुटने के बल बैठना और ऊपर को देखते हुए साँस भरना।
(4) बाएँ पाँव को भी पींछे की ओर फेलाकर हथेलियों और पंजों के बल टिका रहना और साँस छोड़ना।
(5) घुटनों और मस्तक को फर्श पर टेककर साँस भरना और छोड़ना।
(6) साष्टाँग प्रणाम व साँस छोड़ना।
(7) साँस भरते हुए सिर और धड़ उन्नत करना।
(8) साँस छोड़ते हुए नितंब उठाना और शरीर को घुमाकर रखना।
(9) पाँचवें चरण की आवृत्ति।
(10) साँस भरते हुए दाएँ पाँव को दोनों हाथों के बीच लाना।
(11) साँस छोड़ते हुए बाएँ पाँव को भी आगे लाना। चरण दो की आवृत्ति।
(12) साँस भरते हुए ऊपर आना और सीधे खड़े रहकर साँस भरते हुए दोनों हाथों से सूर्य भगवान का प्रणाम करना।

एक प्रकार से इसमें प्राणायाम का भी थोड़ा समावेश किया गया है। एक-एक चरण के साथ एक-एक मंत्र का जप करने का भी विधान है जैसे ओं ह्री मित्राय नमः। ओं ह्री रवये नमः.

सूर्य नमस्कार का अभ्यास किसी अच्छे आचार्य के मार्ग-निर्देशन में ही करें। लाभ अवश्य होगा। (स्वास्थ्य दर्पण)।

(स्वास्थ्य सागर, दिल्ली। 16-10-2004)

शराबी पतियों से उत्पीड़ित पत्नियाँ

पति के उदर में शराब की जो कणिकाएँ प्रवेश पाती हैं ये अपनी करामात मुख्यतः उनकी निरपराध पत्नियों पर ही दिखाया करती हैं। ऐसे पति जब नियमित समय पर मदिरालय की ओर निकल पड़ते हैं तभी से उनकी घरवालियों का दिल यह सोचकर दहलने लगता है कि न जाने शराब पीने के बाद ये मदिरालय में या बाहर किस-किस से झगड़ पड़ेंगे, किस-किस से पिट जाएँगे, किस- किस गड्ढे में गिर जाएँगे और किन-किन के कंधों पर सवार होकर कब घऱ लौट आएँगे तथा लौटने पर घर के कौन-कौन से बर्तन उठाकर पटकेंगे, घर के किन-किन सदस्यों को गाली से भिगो देंगे, गाली में किन - किन अश्लील शब्दों का उपयोग करेंगे, किन - किनको अकारण पीटेंगे आदि आदि।

मेरी जान-पहचान का एक गोपाल (कल्पित नाम) है जो दिन भर पलंग पर पड़ा रहता है। वैसे वह ऑटो - ड्राइवर है। उसकी पत्नी जो एक वनिता होटल में कैशियर का काम संभालती है, अपने पसीने की कमाई से उसे एक-एक ऑटो रिक्शा भी खरीद देती है, पर वह चलाए तब न? कभी ले जाए तो किसी मोटर या ट्रक से टकराकर, ऑटो खराब कर देता है और उसकी मरम्मत के लिए बहुत ज़्यादा पैसा खर्च करना पड़ता है।

शाम तक पड़े - पड़े आराम करने के पश्चात शाम होते ही उठ जाता है, पत्नी के सामने बेशरम होकर हाथ फैलाता है।

पत्नी बड़े क्रोध और घृणा के साथ कुछ पैसे उसे इस अभिशाप के साथ थमा देती है कि चलो, इसे शराबखाने में फूँककर आओ। शराब की दूकान तक वह शरीफों की भाँति चला जाता है, पर ज्यों ही शराब गले के नीचे उतर जाती है तभी वह नर - पिशाच कर रूप धारण कर लेता है। फिर उसके मुँह से केवल गाली ही निकलती है। उसके पाँव ठीक से नहीं चलते। गाली के गीत गाता, लड़खड़ाता गिरता, उठता वह देर रात को घर लौटता है और घरवालों को गाली देता है। यहाँ तक तो सहन किया जा सकता है। पर जब वह अपनी जवान बेटी से अभद्र व्यवहार करने लगता है तो पत्नी भी अपना आपा खो बैठती है। फिर 'भयऊ जूझ जिमि रावन - रामा' जैसा माहौल बन जाता है।

एक हमारे परिचित प्रोफेसर थे जो इंग्लैंड में उच्च अध्ययन करने गए थे। इंग्लैंड़ में उन्होंने पाथोलजी में डाक्टरेट किया। साथ ही साथ मदिरा-पान में भी डॉक्टरेट करके ही लौटे। वैसे वे एक कॉलेज में डीन थे। उनका ऐसा क्रम था कि दो-तीन माह शराब बिल्कुल दूर रहते। फिर एक दिन बोतल उठाते तो फिर लगातार दो-तीन हफ़्ते पीते ही जाते। रात - दिन एक करके पीते बोतल उठाकर पत्नी के सिर पर पटक देते। इस दौर में कभी कॉलेज नहीं जाते। अपने एक जवान मित्र को भी आमंत्रित करके खूब पिलाते।

आखिर ऐसा हुआ कि एक दिन उनका अकस्मात देहान्त हो गया। कहते हैं जो मित्र उनके साथ पीने आते थे उनके साथ मिल करके पत्नी ने शराब में ज़हर मिला के पति को पिलाया था।

कोई कहता है शराब की मात्रा इतनी बढ़ गई कि उसी के ज़हर से उनका देहान्त हो गया। सच्चाई तो भगवान ही जाने।

(अरुण प्रभा अलवार। 11-10-2010)

शोध लेख

हिन्दी साहित्य में गाँधीवाद

महात्मा गाँधी ने आत्मविकास और समाज-विकास को लक्ष्य करके श्रीमद्भगवद्, गीता, बाइबिल, कुरान इत्यादि धार्मिक ग्रंथों से और पश्चिमी और पूर्वी विचारकों से अच्छे-अच्छे आदर्श ग्रहण करके निजी वैयक्तिक और पारिवारिक जीवन में और दक्षिण अफ्रीका तथा भारत के अपने सामाजिक-राजनीतिक जीवन में उनको व्यावहारिक रूप देने के जो प्रयोग किये, उन्हीं के निकष को शायद गाँधीवाद कहा जाता है। इसके मुख्य सैद्धान्तिक आधार हैं सत्य और अहिंसा। अस्तेय, ब्रह्मचर्य, अपरिग्रह, जो कि अष्टांग योग के प्रथम चरण के अन्य तीन अंग हैं, गाँधीवाद के अन्य आधार हैं। अपने आश्रम के निवासियों के लिए

उन्होंने जो एकादशी व्रत निर्धारित किये, उनमें कुछ अन्य सिद्धान्त भी जोड़े। यथा -

अहिंसा सत्यं अस्तेयं
ब्रह्मचर्यं, असंग्रहं
शरीर श्रमं अस्वाद
सर्वत्र भय वर्जनं
सर्वधर्म समानत्वं
स्वदेशी, स्पर्श भावना।

इन सिद्धान्तों को व्यावहारिक रूप दिये गये तो कुछ मुद्दे उभरकर आये, जिनमें प्रमुख हैं - वर्ग सहयोग, विकेन्द्रीकरण, हृदय - परिवर्तन व सत्याग्रह। रचनात्मक कार्यक्रम इनके स्थूल रूप हैं, जिनके अंग हैं - सांप्रदायिक एकता, अस्पृश्यता - निवारण, मद्यनिषेध, खादी - प्रचार, ग्रामोद्योग, सफ़ाई की शिक्षा, बुनियादी तालीम, हिन्दी - प्रचार, अन्य भारतीय भाषाओं का विकास, स्त्रियों की उन्नति, स्वास्थ्य - शिक्षा, प्रौढ़-शिक्षा, आर्थिक समानता, कृषक - संगठन, श्रमिक - संगठन, विद्यार्थी - संगठन और स्वतंत्रता के लिए तथा स्वराज के लिए निरंतर संघर्ष। अन्याय और शोषण के विरुद्ध निर्भीकता से संघर्ष करते हुए आत्मबलि देना ही शायद गाँधीवाद की मुख्य पहचान है, जिसे सूली का मार्ग भी कहा जाता है।

साहित्य तो समाज का दर्पण कहा जाता है। समाज में जो अच्छाइयाँ और बुराइयाँ दिखती हैं, उनका प्रतिबिंब साहित्य में पड़ना स्वाभाविक ही है। साहित्यकार व्यक्ति स्तर पर और समाज स्तर पर जो भिन्न प्रवृत्तियाँ देखता है, उनका सूक्ष्म निरीक्षण करता है, अध्ययन करता है, विश्लेषण करता है और उनको इस ढंग से प्रस्तु करता है कि पाठक के हृदय में अच्छाई के प्रति, सुन्दर के प्रति आकर्षण हो और बुराई के प्रति, असुंदर के प्रति विकर्षण। महात्मा गाँधी के जीवन में, उनके व्यक्तिगत और समाजगत प्रयोगों में जो कर्म - सौन्दर्य प्रकट हुआ है, विशेषकर असत्य को सत्य से और हिंसा को अहिंसा से जीतने के प्रयोगों में मानवता का जो निखार आया है, उसके प्रभाव से विश्व का कोई भी साहित्य नहीं बच सकता। गाँधीजी यद्यपि विश्व नागरिक थे, यद्यपि उनके जीवन का एक बहुत बड़ा भाग इंग्लैंड़ और दक्षिण अफ्रीका में बीता, तो भी वे मुख्यतः भारतीय नेता थे। उनके जीवन का उत्तरार्ध मुख्यतः भारत को विदेशी शासन से विमुक्त करने के संघर्ष का नेतृत्व करते हुए व्यतीत हुआ था। उस संघर्ष से पूरे भारत की जनता जुड़ गयी थी। अतः सारी भाषाओं के साहित्यों में गाँधीवाद का प्रभाव पड़ना स्वाभाविक था। चूँकि भारत के एक बड़े भू भाग में बोली जानेवाली भाषा हिन्दी रही, इसलिए हिन्दी पर गाँधीवाद का सर्वाधिक प्रभाव पड़ना भी स्वाभाविक ही था।

हिन्दी साहित्य पर गाँधीवाद का इतना गहरा प्रभाव पड़ा है कि स्वयं इसी विषय पर कई शोध-लेख लिखे गये हैं, कुछ शोध - प्रबंध भी निकले हैं। कितना अच्छा होता यदि ये सारी सामग्रियाँ इंटरनेट पर उपलब्ध हो जातीं! मेरे हाथ जो दो शोध ग्रंथ लगे, वे हैं - डॉ. अरुण चतुर्वेदी द्वारा रचित 'गाँधीवादी विचारधारा और हिन्दी उपन्यास' तथा रेखा शर्मा द्वारा रचित 'गाँधीवादी विचारधारा और हिन्दी कहानी'। 'हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, मुंबई' द्वारा संचालित 'महात्मा गाँधी मेमोरियल रिसर्च सेन्टर, मुंबई' की शोध - पत्रिका 'हिन्दीस्तानी ज़बान' के अक्तूबर - दिसंबर 2000 के अंक में डॉ.

सुशीला गुप्ता द्वारा संपादित और 'हिन्दुस्तानी प्रचार सभा' द्वारा प्रकाशित एक और ग्रंथ की समीक्षा श्रीमती कमलेश बख्शी ने लिखी है। ग्रंथ का शीर्षक है - 'हिन्दी साहित्य में गाँधीवादी चेतना'। हिन्दी साहित्य के कई इतिहास ग्रंथों में भी हिन्दी की विविध विधाओं पर गाँधीवाद की जो छाप पड़ी है, उसका विश्लेषण मिलता है।

मेरे सीमित अध्ययन के आधार पर कुछ तो माखनलाल चतुर्वेदी, मैथिली शरण गुप्त, रामनरेश त्रिपाठी, सियाराम शरण गुप्त, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', सुभद्राकुमारी चौहान, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रा नंदन पंत आदि की कविताओं में तथा प्रेमचन्द, जैनेन्द्र कुमार, विष्णु प्रभाकर आदि के उपन्यासों, कहानियों और नाटकों में गाँधीवाद की सर्वाधिक छाप मिलती है।

माखनलाल चतुर्वेदी की कविता 'पुष्प की अभिलाषा' तो केरल के स्कूली पाठ्यक्रम में स्थान पाती रही है। पुष्प साधारणतया यही चाहेगा कि वह सुरबाला के गहनों में गूँथा जाये, प्रेमी की माला में बिंधकर प्यारी को ललचाये या देवों के सिर पर चढ़कर इठलाये। यहाँ तो, पुष्प भगवान से यही प्रार्थना करता है - 'मुझे तोड़ लेना वनमाली, उस पथ पर देना तुम फेंक, मातृभूमि पर शीश चढ़ाने जिस पथ जावें वीर अनेक'। मातृभूमि पर शीश चढ़ाने की इस अभिलाषा में गाँधीवाद की ही अनुगूँज मिलती है न? माखनलाल चतुर्वेदी ऐसे लेखक थे, जिन्हें अपनी राजनीतिक सक्रियता के कारण कई बार कारावास भोगना पड़ा था।

सियाराम शरण गुप्त की ये पंक्तियाँ तो खादी प्रचार का ही काम करती हैं -

"खादी के धागे - धागे में
अपनेपन का अभिमान भरा।"

यह पंक्ति भी शायद उन्हीं की है -

"काम गाँधी ने किया जो
काम आँधी कर न सकती।"

हिन्दी साहित्य के बहुचर्चित छायावाद को कुछ आलोचक गाँधी युग की ही देन मानते हैं। डॉ. आलोक कुमार रस्तोगी ने अपने 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' शीर्षक ग्रंथ के द्वितीय खण्ड में लिखा है - "महात्मा गाँधी ने विश्वबंधुत्व, लोक मंगल की विचारधारा को अपनाकर साम्य भाव को महत्व दिया। छायावादी रचनाओं में गाँधी जी के इस साम्य भाव और मानव - कल्याण की भावनाओं को भरपूर स्थान मिला। यदि छायावाद को गाँधीयुग की देन मान लें तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी।" डॉ.नगेन्द्र के अनुसार "गाँधी की अहिंसा उस युग की चेतना की प्रतीक थी, अतएव छायावाद में वैयक्तिक चेतना के आस्तिक अधिमानसिक रूप का ही विकास हुआ। पन्त, महादेवी जैसे सुकुमार भावनाओं के कवियों ने तो उसे आत्मसात् कर लिया। प्रसाद और निराला जैसे उद्दाम कवियों ने भी उन मूल्यों को ही स्वीकार किया।"

हिन्दी के उपन्यास सम्राट माने जानेवाले प्रेमचन्द गाँधी जी से इतने प्रभावित हुए थे कि उन्होंने अपनी सरकारी नौकरी त्याग दी थी और जन - जागरण के कार्य में लग गये थे। उनकी कई कहानियों में गाँधीवादी पात्र जीवित हैं। 'होली का उपहार' शीर्षक कहानी की सुखदा इसका अच्छा उदाहरण है। उसे होली के अवसर पर उपहार देने के लिए अमरकांत एक कीमती विदेशी साड़ी खरीदता है। चूँकि विदेशी वस्त्रों की दूकानों पर स्वयंसेवकों द्वारा पिकेटिंग हो रही थी, इसलिए उसे

स्वयंसेवकों की नज़र से बचने के लिए दूकान के पिछवाड़े के द्वार से दूकान में घुसना पड़ा था। पर बाहर निकलते ही स्वयंसेवकों ने उसे पकड़ लिया। साड़ी हड़प ली। सुखदा, जो उनका नेतृत्व कर रही थी, उसे वापस दिला देती है। पर सुखदा के व्यक्तित्व का इतना प्रभाव अमरकान्त पर पड़ता है कि वह विदेशी साड़ी जला देता है और दूसरे दिन के पिकटिंग में वह भी भाग लेता है और गर्व के साथ जेल जाता है।

प्रेमचन्द के कई उपन्यासों में गाँधीवाद की स्पष्ट झलक मिलती है, विशेषकर 'निर्मला', 'प्रेमाश्रम', 'गबन', 'कर्मभूमि' और 'रंगभूमि' में। 'गोदान' में भी गाँधीवादी चेतना मुखर है, यद्यपि बच्चन सिंह ने कहा है कि 'गोदान' में प्रेमचंद गाँधीवाद से मुक्त हैं। 'निर्मला' के एक पात्र को यों प्रस्तुत किया गया है - 'खद्दर के बड़े प्रेमी हैं पीठ पर खादी लादकर देहातों में बेचने जाया करते हैं और व्याख्यान देने में भी चतुर हैं।' 'प्रेमाश्रम' में एक पात्र से कहलवाया है - "इसके लिए हमें विदेशी वस्तुओं पर कर लगाना पड़ेगा। यूरोपवाले दूसरे देशों से कच्चा माल ले जाते हैं, जहाज़ का किराया दे देते हैं, उन्हें मज़दूरों को कड़ी मज़दूरी देनी पड़ती है, उस पर हिस्सेदारों को नफ़ा भी खूब चाहिए। हमारा घरेलू शिल्प इन समस्त बाधाओं से मुक्त रहेगा।"

'गबन' में प्रेमचन्द स्वातंत्र्योत्तर भारत के नेताओं, बाबुओं और बुद्धिजीवियों की स्वार्थपरता पर अपनी दीर्घदर्शिता की दूरबीन से दृष्टिपात करते हुए देवीदीन के मुख से प्रश्न कराते हैं - "तो सुराज मिलने पर दस - दस, पाँच - पाँच हज़ार के अफ्सर नहीं रहेंगे? वकीलों की लूट नहीं रहेगी? पुलिस की लूट बंद हो जाएगी?" स्वतंत्रता - प्राप्ति पर सुविधाभोगिता की वृत्ति पनपेगी, इसका भी अनुमान करते हुए देवीदीन से पुछवाते हैं - "साहब, सच बताओ, जब तुम सुराज का नाम लेते हो, उसका कौन-सा रूप तुम्हारी आँखों के सामने आता है? तुम भी बढ़ी - बढ़ी तलब लोगे? तुम भी अंग्रेज़ की तरह बंगले में रहोगे? पहाड़ों की हवा खाओगे? अंग्रेज़ी ठाट बनाये घूमोगे? इस सुराज से देश का क्या कल्याण होगा? तुम्हारी और तुम्हारे भाई - बन्दों की ज़िन्दगी भले ठाट और आराम से गुज़रे, पर देश का कोई भला न होगा।" 'रंगभूमि' में युवकों का जो समूह गीत सोफिया का ध्यान आकृष्ट करता है, उसमें गाँधीवाद की ही तो धुन है, जैसे -

"शांति समर में कभी भूलकर धैर्य नहीं खोना होगा।
वज्र प्रहार भले सिर पर हो, किन्तु नहीं रोना होगा
अरि से बदला लेने का मन-बीज नहीं बोना होगा
देश-दाग को रुधिर वारि से हर्षित हो धोना होगा।
होगी निश्चय जीत धर्म की यही भाव भरना होगा।
मातृभूमि के लिए जगत में जीना और मरना होगा।"

वर्तमान हिन्दी साहित्यकारों का गाँधी संबंधी दृष्टिकोण विष्णु प्रभाकर की इस उक्ति में स्पष्टतः झलकता है - 'गाँधी जी ने दूसरे के लिए जीवन जीने की सीख भी दी थी। मेरे अंतरतम का विश्वास है कि यदि लोग इस पर चल सकें तो बहुत -सी समस्याएँ अपने आप सुलझ जाएँगी। इससे बेहतर मनुष्य और बेहतर नागरिक बनेंगे। फिर गाँधीवाद को, सामाजिक, संगठन या शासन की विधि के रूप में, मेरा विचार है, अभी तक नहीं लाया गया। सफलता - असफलता का तो तभी पता चलेगा, जब इसे प्रयोग में लाया जाये। मेरा विश्वास है कि हमारे जैसे विकासशील देश के लिए गाँधीजी का ग्राम - स्वराज्य का तरीका ही अधिक

उपयुक्त होगा। चीन ने उनसे लेकर नहीं, बल्कि अपने अनुभव से इस दिशा में बहुत कुछ किया है। जापान में भी नयी तालीम सफल हुई है, जो गाँधीवादी नयी तालीम से मिलती जुलती है।

आशा करें, वर्तमान भारतीय समाज को अपनी तमाम विसंगतियों से मुक्ति दिलाने में हिन्दी साहित्यकारों की यह गाँधी - उन्मुखी चेतना अपना दायित्व निभा पाएगी।

(हिन्दुस्तानी जबान, अंकः अक्तूबर-दिसंबर 2001)

नागरी में मलयालम स्वनिमों के अंकन में होनेवाली कुछ कठिनाइयाँ

'नागरी संगम' पत्रिका (प्रकाशक - नागरी लिपि परिषद्, 19, गाँधी स्मारक निधि, राजघाट, नई दिल्ली -110002) के अप्रैल - जून अंक में डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा ने अपने लेख 'नागरी लीपिः शक्ति और संभावनाएँ' में दक्षिण की भाषाओं के स्वनिमों के नागरी लिप्यंकन की चर्चा करते हुए लिखा है-

"मलयालम भाषा में प्रयुक्त मूर्धन्य 'र' की ध्वनि को व्यक्त करने के लिए देवनागरी में कोई पृथक् वर्ण नहीं था। इसलिए आजकल नुक्ते युक्त 'र' का प्रयोग किया जा रहा है, जो नागरी लिपि में अंतर्निहित सहिष्णुता की शक्ति का ही परिणाम है। वस्तुतः मलयालम में मूर्धन्य 'र' बहुप्रचलित है। इन पंक्तियों के लेखक की दृष्टि में इसके लिए नुक्ते युक्त 'र' का प्रयोग अधिक मूर्धन्य 'र' के प्रयोग से सर्वथा अनजान व्यक्ति को भ्रमित कर देता है। मलयालम के 'पुऱा' और 'पऱम' जैसे शब्द यदि देवनागरी में 'पुरा' या 'परम' लिखे जाएँ तो ऐसा अज्ञ व्यक्ति भी मूल ध्वनि के पर्याप्त निकट का उच्चारण सहज ही कर लेगा, जिसे उच्चारण के स्पष्टीकरण द्वारा पूर्णतः शुद्ध करवाया जा सकता है। मलयालम में 'र' के अलावा ह्रस्व 'ए' और 'ओ' स्वर तथा ट्र व्यंजन भी ऐसा है, जिसके नीचे बिन्दी का प्रयोग कर देवनागरी में अपनाया जा सकता है।"

डॉ. शैलेन्द्र कुमार शर्मा ने दक्षिण की भाषाओं में जो रुचि दर्शायी है वह सराहनीय है। पर जो बातें उन्होंने मलयालम के संबंध में लिखी हैं उनसे यही पता चलता है कि उनके जैसे हिन्दी विद्वान भी मलयालम के स्वनिमों से एक सीमा तक अनभिज्ञ हैं।

यह ठीक है कि मलयालम में 'ए' और 'ओ' के दो - दो रुप हैं - ह्रस्व और दीर्घ। ये अर्थ-भेदक हैं। इस कारण इनके लिए अलग - अलग लिपि-चिह्न भी आवश्यक हैं। जैसे -

चेटि (ह्रस्व 'ए')	-	पौधा
चेटि (दीर्घ 'ए')	-	दासी
कोटि (ह्रस्व 'ओ')	-	झंड़ा
कोटि (दीर्घ 'ओ')	-	करोड़

नागरी लिपि में ह्रस्वता और दीर्घता दिखाने केलिए 'ए' और 'ओ' में कैसा परिवर्तन किया जाए? हिन्दी में इसकी विशेष आवश्यकता इसलिए महसूस नहीं होती कि 'ए' और 'ओ' के ह्रस्व रूप स्वतंत्र स्वनिम नहीं, केवल संस्वन हैं। मलयालम में ही नहीं तेलुगु जैसी कुछ अन्य भाषाओं में भी 'ए' और 'ओ' के ह्रस्व रुप अलग स्वनिम के रूप में प्रयुक्त होते हैं। (देखिए, पृष्ठ 128, व्यतिरेकी भाषा विज्ञान : डॉ. राघवरेड्डी)

तेलुगु -

मेड (ह्रस्व ए)	-	गर्दन
मेड ('दीर्घ ए')	-	भवन

'ए' और 'ओ' के नीचे बिन्दी लगाकर उन्हें ह्रस्व का जो सुझाव डॉ. शर्मा जी ने दिया है वह स्वीकार्य लगता है।

डॉ.शर्मा ने जिस मूर्धन्य 'र' का जिक्र करके 'पुष़ा' और 'पष़म' के उदाहरण दिए हैं वह 'र' (वत्स्र्य लुंठित) का मूर्धन्य रूप नहीं है। 'पष़म' में बीचवाला जो स्वनिम है उसी प्रकार उच्चारित होता है जैसे - यूनिवेर्सिटी में मलयालम के ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त उपन्यासकार 'तकष़ि' के अंतिम अक्षर में यही 'ष' है, जिसको रोमन लिपि में 'sha' लिखा जाता है। जैसे 'तकष़ि'। हिन्दी भाषाभाषी अनभ्यास के कारण इसका ठीक उच्चारण नहीं कर पाते। वे इसे या तो 'र' के रुप में या 'य' के रूप में ही उच्चारित कर पाते हैं। यह 'र' की अपेक्षा 'य' और 'ष' के अधिक निकट है। यह 'र' के समान लुंठित नहीं है। मूर्धन्य, उत्क्षिप्त, पार्श्व संघर्षी है (पृष्ठ 3, आधुनिक भाषा शास्त्रः के.एम.प्रभाकर वारियर और शान्ता अगस्टिन, प्रकाशकः केरल भाषा इन्स्टिट्यूट)।

'र' हिन्दी में वत्स्र्य लुंठित है। मलयालम में इसके अतिरिक्त एक और स्वनिम है जो परवत्स्र्य (Post - Alveolar) लुंठित है। ये दोनों मलयालम में अर्थभेदक हैं। इसलिए सोचना है कि 'र' के नीचे बिंदी लगाकर परवत्स्र्य लुंठित 'र' के लिए प्रयुक्त किया जाए। डॉ.के.एम.जोर्ज ने वत्स्र्य 'र' के लिए (ड़) और परवत्स्र्य के लिए /ड़/ चिह्न दिया है, रोमन लिपि में (Malayalam Grammar & Reader - Dr.K.M. George)

हिन्दी में ल वत्स्र्य पार्श्विक है। मलयालम में मूर्धन्य पार्श्विक, जिसका उच्चारण हिन्दी 'ड़' के समीप है। वलं - दायाँ, वळं - खाद। इसके लिए 'ळ' चिह्न ठीक लगता है।

हिन्दी में एक ही ट है जो मूर्घन्य, अघोष अल्पप्राण स्पर्श है। मलयालम में एक और ट है जो वत्स्र्य अल्पप्राण अघोष स्पर्श है। अंग्रेज़ी ड्डुह्य के अंतिम स्वनिम के समान ट के नीचे बिन्दी लगाकर इसका लिप्यंतरण नागरी में किया जाए?

नागरी को संपर्क लिपि का रूप देने केलिए यह अत्यंत आवश्यक है कि भारत की हर प्रमुख भाषाओं की ध्वनियों का तुलनात्मक और व्यतिरेकी अध्ययन किया जाए और भारतीय भाषाओं के हर स्वनिम के लिए नागरी में आवश्यक अतिरिक्त वर्ण बनाया जाए।

(20 वाँ अखिल भारतीय नागरी लिपि सम्मेलन स्मारिका, रायपुर। जनवरी 1997)

अरबी की एक रामायण

अरबी में रचित एक रामायण पर मलयालम समाचार पत्र में मातृभाषा में एम.एन.कारश्शेरि का जो पंडित्यपूर्ण लेख प्रकाशित हुआ है, उसका सारांश हिन्दी पाठकों के लिए प्रस्तुत करना चाहूँगा। इस रामायण का उल्लेख फादर कामुल बुल्के के रामकथा संबंधी शोध ग्रंथ में नहीं हो पाया है।

कामिल कैलानी (1987-1959) आधुनिक अरबी साहित्य के एक प्रमुख हस्ती थे। मिस्र में जन्मे कैलानी ने अरबी भाषा के बाल साहित्य रचयिताओं में गणनीय स्थान पाया है। ये बड़े धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। बचपन में ही कुरान शरीफ़ कंठस्थ कर लिया था। उनकी बाल साहित्य रचनाओं में अधिकांश फ्रेंच और अंग्रेज़ी भाषाओं से अनूदित है।

अंग्रेज़ी में प्राप्त किसी रामायण को आधार बनाकर उन्होंने 'री गाब्बतिश्शयातीन' (शैतानों के जंगल में) शीर्षक से अपनी रामायण रचना अरबी में लिखी होगी, ऐसा अनुमान है। करीब अस्सी पृष्ठों की यह पुस्तक बाल साहित्य के रूप में रची गई है। 1985 में यह पुस्तक कालिकट विश्वविद्यालय के बी.ए. (अरबी) पाठ्यक्रम में निर्धारित हुई थी।

इस कारण इसके संस्करण केरल में भी प्रकाशित हुए और इसका अनुवाद मलयालम में निकला। अनुवाद किया है के.ए. खादर फैसी ने। इन्होंने मलयालम और अरबी में पन्द्रह पुस्तकें लिखी हैं। इस रामायण की कथा निम्नलिखित अंशों में मूलकथा से भिन्न है-

1. इस रामायण में सीता परित्याग का उल्लेख नहीं है। रावण - वध के उपरांत, सीता का साथ अयोध्या लौटे श्रीराम दीर्घकाल तक प्रजा का हितकारी पालन करते हैं। यहाँ कथा समाप्त होती है।

2. लंका प्रवास को लेकर इस रामायण में राम, सीता की चारित्र्य शुद्धि पर संदेह नहीं करते। न ही सीता से कोई कटूक्ति कहते हैं।

3. कैलानी के रामायण में किष्किंधा का यथार्थ हकदार सुग्रीव है। भाई बाली सुग्रीव को स्थानच्युत करने के कई उपाय करता है।

सुग्रीव का मनोबल जब नष्ट हो जाता है तब वह स्वयं गद्दी छोड़ देता है। तब बाली राजा बनता है। सुग्रीव के साथ संधि करके राम बाली को मारकर राज्य सुग्रीव को दे देते हैं।

इस रामायण में शूर्पणका नाम का एक पात्र ही नहीं है।

मारीचवध के प्रसंग में जब मारीच की पुकार सुनकर लक्ष्मण, राम को बचाने के लिए पर्णकुटी में सीता को अकेला छोड़कर जाने लगता है तब सीता लक्ष्मण के प्रति यहाँ कोई कटुक्ति नहीं कहती।

इस प्रकार देखें तो कैलानी ने अपने अरबी रामायण में राम का चरित्र-चित्रण मर्यादा पुरुषोत्तम आदर्श राजा के रूप में ही किया है। महर्षि वाल्मीकि ने अपनी रामायण रचना में राम पर जो दोष आरोपित किए हैं उन दोषों से भी कैलानी ने अपने राम को सर्वधा मुक्त रखा है।

मुझे ज्ञान नहीं है कि कैलानी की अरबी रामायण का अनुवाद हिन्दी में उपलब्ध है या नहीं। यदि अब तक उसका अनुवाद हिन्दी में नहीं हो पाया है तो निश्चित रूप से उसका अनुवाद होना ही चाहिए। रामायणों के तुलनात्मक अध्ययन करनेवालों के लिए इसका महत्व होगा ही। कई अन्य दृष्टियों से भी इसकी उपयोगिता अवश्य होगी।

धार्मिक सहिष्णुता और सांस्कृतिक समन्वय को बढ़ावा देने में भी ऐसी साहित्यिक रचनाओं का बड़ा महत्व है।

('रांची एक्सप्रेस' में प्रकाशित)

सूरज बादलों से ढका हुआ है

आपने कभी कन्याकुमारी की सैर की है? यह हमारे देश का दक्खिनी छोर है। तीन सागरों का संगम। पश्चिम का अरब सागर, दक्षिण का हिन्द महासागर और पूरब की बंगाल की खाड़ी।

तीनों की उत्ताल तरगें - उच्छल जलधि तरगें- वहाँ एक दूसरे के गले मिलती हैं- एक दूसरे से एकाकार हो जाती हैं। एक दूसरे में विलीन हो जाती हैं। विराट जलनिधियों का अद्‌भुत समन्वय कन्याकुमारी की तटीय भूमि से थोड़ी दूरी पर समुद्र में स्थित विवेकानन्द चट्‌टान पर खड़े होकर आप इस संगम की शोभा निहार सकते हैं। इसी चट्‌टान पर बैठकर तप करते हुए स्वामी विवेकानन्द के मन में दाद यह सुदृढ़ हो गया था कि अपने देश की दुस्थिति को दूर करने के लिए अपना जीवन ही लगा दूँगा। चट्‌टान पर विवेकानन्द की भव्यमूर्ति है। देश-विदेश के सैकड़ों पर्यटक इस चट्‌टान पर चढ़कर सागर मिलन की शोभा देखते हैं।

हाल ही में मुझे तीन दिन कन्याकुमारी में बिताने का अवसर मिला। भारत सरकार के आवास तथा नगर विकास निगम की ओर से एक राजभाषा कार्यशाला कन्याकुमारी के विवेकानन्द केन्द्र में आयोजित हुई थी। उसमें निगम के कई वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया। दिल्ली से श्री चौहान जी, श्री जैन जी और श्री सेठी जी पधारे थे।

कन्याकुमारी में बरसात का-सा मौसम था। रह - रह कर छींटे पड़ती थीं। आसमान पर बादल छाये हुए थे। एक दिन हमने समुद्र तट पर खड़े होकर सूर्यास्त देखने की कोशिश की। दूसरे दिन सुबह समुद्र तट पर सूर्योदय देखने की इच्छा से देर तक खड़े रहे। सूर्यास्त ने कुछ तो स्पष्ट दिखाई दिया। पर सूर्योदय के समय बादल इतने थे कि सूर्य का बिंब छिपा ही रहा। बादलों से घिरकर लाल पीली किरणें समुद्र की जलराशि के उसपार बहुत सुन्दर नज़ारा उपस्थित कर रही थीं। हम लोग निराश हो गये।

कार्यशाला की चर्चाओं से अब यह बात स्पष्ट हो गई कि यद्यपि हमारा संविधान हिन्दी को संघ सरकार की राजभाषा बनाने में कोई रोड़ा नहीं अड़का रहा है अंग्रेज़ीपरस्त उच्च अधिकारियों के अंग्रेज़ी प्रेम के बादल राजभाषा हिन्दी का बिंब छिपाये हुए हैं। वे चाहते हैं कि अंग्रेज़ी ही देश की राजभाषा बनी रहे। सारी भरती परीक्षाएँ अंग्रेज़ी में होती रहें, अंग्रेज़ी माध्यम में सी.बी.एस.इ. पाठ्यक्रम में सीखें, उन्हीं के बच्चे इन परीक्षाओं को उत्तीर्ण करके सारे उच्च पदों पर विराजें। हाँ, जहाँ राजभाषा अधिनियम आदि ज़्यादा सख्त हैं वहाँ वे हिन्दी को बढ़ाने में आगे हैं। वैसे हर क्षेत्र में दानवी शक्तियाँ मानवी शक्तियों को घेरी हुई हैं वैसे ही यहाँ भी है। कार्यशाला ने इस गुलाम मानसिकता से अधिकारियों को छुड़ाने के उपाय भी सोचे। भारत का शासन भारतीय भाषाओं में ही होना चाहिए। इस पक्ष में प्रबल जनमत तैयार करना होगा। इसमें संचार माध्यमों को प्रमुख भूमिका अदा करनी होगी। राजभाषा संबंधी नियम भी अधिक सक्त बनाने होंगे ताकि उनका अनुपालन अनिवार्य माना जाये। स्वभाषा की उन्नति किए बिना स्वराज्य का उन्नयन कैसे करेंगे?

(वीर मुलाका हिन्दी साप्तहिक 17 जनवरी 1999)

◆ पूर्व अध्यक्ष,
केरल हिन्दी प्रचार सभा।
पूर्व संपादक, 'केरल ज्योति' पत्रिका।
पूर्व संयुक्त सचिव, कृषि विभाग।

के.जी. बालकृष्ण पिल्लै से साक्षात्कार:

♦ डॉ.पी.लता

(1) जब 'केरल ज्योति' पत्रिका का संपादन - कार्य शुरू किया तब आपका अनुभव क्या था? 'केरल ज्योति' का संपादन - कार्य शुरू करने के पहले आप क्या कर रहे थे?

हरिप्पाटु के तपोनिष्ठ हिन्दी सेवी श्री के.जी. कुट्टन पिल्लैजी की शिष्यता में अध्ययन करके अगस्त 1951 में मैं नें'दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा' की 'राष्ट्रभाषा' परीक्षा और अप्रैल 1962 में 'ट्रावंकोर विश्वविद्यालय' की 'हिन्दी विद्वान' परीक्षा उत्तीर्ण की थी। 1951 से ही मैं अपने गाँव में हिन्दी का प्रचार करने लगा था। 1951 से 1955 तक कुछ स्कूलों में हिन्दी अध्यापन किया। तत्पश्चात् राज्य सरकार के कृषि विभाग में लिपिक नियुक्त हुआ और तिरुवनन्तपुरम् आ गया। केरल हिन्दी प्रचार सभाके संस्थापक मंत्री एवं समर्पित हिन्दी सेवी श्री के. वासुदेवन पिल्लैजी के शिष्यत्व में अध्ययन करके 1959 में 'हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग' की 'हिन्दी साहित्य रत्न परीक्षा' उत्तीर्ण की और सभा के हिन्दी प्रचार अभियान में भी जुड़ गया। 'केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा' में एक वर्ष तक अध्ययन करके 1962 में हिन्दी शिक्षण निष्णात की परीक्षा उत्तीर्ण की। इस दौरान के.एम. इंस्टिट्यूट, आगरा की संध्याकालीन कक्षा में पढ़कर आगरा विश्वविद्यालय की डिप्लोमा इन हिन्दी फोनेटिक्स परीक्षा भी उत्तीर्ण की। 1953 में मलयालम में और 1960 में करीब हिन्दी में लिखना आरंभ किया था। 1962 में जब केरल हिन्दी प्रचार सभा की कार्यकारिणी समिति का सदस्य बन गया तब सभा के सभी कार्यों में रुचि लेने लगा। सभा की ओर से जब 'केरल ज्योति' पत्रिका का प्रकाशन आरंभ हुआ उसके संपादन-कार्य में भी रुचि लेने लगा और सहयोग देने लगा।

(2) आपके अनुभव में अहिन्दी भाषी क्षेत्र केरल में एक हिन्दी पत्रिका का प्रकाशन - कार्य आसान है?

अहिन्दी भाषी - क्षेत्र केरल से हिन्दी पत्रिका का स्वौच्छिक प्रकाशन आसान नहीं है। यद्यपि हिन्दी हमारे स्कूलों में अनिवार्य विषय के रूप में सिखायी जाती है तो भी हिन्दी पत्रिकाएँ पढ़ने की आदत अभी केरलीय समाज में बन नहीं पायी है।

केरल में करीब पाँच हज़ार ग्रंथालय हैं। उनमें हिन्दी पत्रकाएँ मंगवाने की प्रवृत्ति अभी आरंभ नहीं हो पायी है। आए दिन स्कूली हिन्दी अध्यापन की प्रक्रिया में जो छात्र -केन्द्रित आधार आरंभ हुए हैं उनके परिणामस्वरूप स्कूली ग्रंथालयों को संपुष्ट किया जा रहा है। स्कूली ग्रंथालयों / वाचनालयों में हिन्दी पुस्तिकाएँ भी मंगवायी जाने लगीं तो ग्राहकों का एक नया वर्ग तैयार हो जाएगा। नये ग्राहक / पाठक वर्ग की रुचि और आवश्यकता के अनुरूप पत्रिका का सामग्री-संचयन, संपादन करने पर हिन्दी पत्रिका के प्रकाशन में सुगमता आ सकती है। केरल सरकार के जनसंपर्क विभाग की ओर से 'केरला कॉलिंग' शीर्षक एक अंग्रेज़ी मासिक पत्रिका का प्रकाशन हो रहा है। इसका एक हिन्दी संस्करण आसानी से निकाला जा सकता है।

केरल साहित्य अकादमी की ओर से एक अंग्रेज़ी पत्रिका निकाली जाती है, जिसमें मलयालम साहित्य का परिचय अंग्रेज़ी माध्यम से दिया जाता है। इसका भी एक हिन्दी संस्करण आसानी से प्रकाशित हो सकता है।

(3) अहिन्दी भाषी क्षेत्र केरल से निकलनेवाली हिन्दी पत्रिका की दृष्टि से केरल ज्योति के संबन्ध में हिन्दी दुनिया की प्रतिक्रिया क्या थी?

हिन्दी भाषी क्षेत्र के लेखकों और पाठकों ने 'केरल ज्योति' को सदा प्रोत्साहित किया है। पर हिन्दी क्षेत्र के बहुत कम व्यक्ति ही 'केरल ज्योति' के नियमित ग्राहक बने हैं। हिन्दी के मूर्धन्य लेखकों में श्री विष्णु प्रभाकर, श्री रामेश्वर दयाल दुबे जैसे इने-गिने सज्जन ही केरल ज्योति को रचनात्मक सहयोग देते रहे हैं। इसका संभवतः एक कारण यह भी रहा होगा कि 'केरल ज्योति' अपने लेखकों को पारिश्रमिक देने की स्थिति में नहीं रही।

(4) 'केरल की हिन्दी पत्रकारिता' की उपलब्धियों के बारे में आपका विचार क्या है?

'केरल की हिन्दी पत्रकारिता' की उपलब्धियाँ उल्लेखनीय रही हैं। केरल को निकटता से समझने में सहायक पर्याप्त सामग्री विभिन्न हिन्दी पत्रिकाओं में प्रकाशित होती आयी है। केरल की सांस्कृतिक विशेषताओं की जो अलग पहचान रही है, उसे हिन्दी पाठक परखने लगे हैं तो उसका मुख्य श्रेय 'केरल की हिन्दी पत्रकारिता' को है। मलयालम साहित्य और मलयालम के श्रेष्ठ साहित्यकारों को राष्ट्र स्तर पर परिचित कराने का कार्य भी 'केरल की हिन्दी पत्रकारिता' करती आ रही है। केरल के हिन्दी छात्रों व विद्वानों को राष्ट्र स्तरीय हिन्दी पत्रकारिता से जोड़ने का काम भी केरल की हिन्दी पत्रकारिता करती आ रही है।

(5) आप पत्रकारिता के क्षेत्रों में अनुभवी व्यक्ति हैं। अपने अनुभवों से बताइए कि केरल में हिन्दी पत्रकारिता का भविष्य क्या होगा?

केरल में हिन्दी पत्रकारिता अब भी उत्तर भारत की स्थिति तक नहीं पहुँच पायी है। जिस प्रकार अंग्रेज़ी पत्रकारिता केरल के कई पत्रकारों केलिए आजीविका का साधन बन गयी है वैसी ही स्थिति हिन्दी पत्रकारिता के क्षेत्र में भी लानी है। समाचार एजेन्सियों, फीचर सेवाओं आदि से केरल की हिन्दी पत्रकारिता को जोड़ने से यह लक्ष्य सिद्ध हो पाएगा। इस संबन्ध में स्पष्ट धारणाएँ बनाने केलिए विश्वविद्यालय स्तर पर संगोष्ठियाँ, कार्यशालाएँ आदि आयोजित की जानी चाहिए। विश्वविद्यालयों के हिन्दी विभागों में शोध केलिए जो विषय चुने जाते हैं उनमें कुछ तो पत्रकारिता से भी सबन्धित रहें, ताकि इस संबन्ध में गहन चिन्तन हो सके।

(6) 'केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय' की वित्तीय सहायता से प्रकाशित पत्रिका है 'केरल ज्योति'। यह वित्तीय सहायता पत्रिका को कब से मिल रही है? यह वित्तीय सहायता प्राप्त करने केलिए उसके संपादक के स्तर पर आपने क्या - क्या कार्य किये?

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय हिन्दीतर प्रदेशों में हिन्दी प्रचार-कार्य को आगे बढ़ाने केलिए स्वैच्छिक संस्थाओं की कुछ परियोजनाओं के कार्यान्वयन में आर्थिक सहयोग देता है। इसी नीति के अंतर्गत 'केरल ज्योति' के प्रकाशन केलिए पिछले कुछ वर्षों से थोड़ी आर्थिक सहायता मिलती रही है। यह सहायता केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा भेजे जा रहे वार्षिक प्रकाशनों के आधार पर दी जाती है। हाँ पत्रिका की गुणवत्ता पर अवश्य स्थान दिया जाता है।

(7) 'केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय' से प्राप्त वित्तीय सहायता 'केरल ज्योति' के प्रकाशन को पर्याप्त है?

'केरल ज्योति' के प्रकाशन केलिए 'केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय' से प्राप्त आर्थिक सहायता इतनी अपर्याप्त रही है कि प्रथम कुछ महीनों के बाद पत्रिका का संपादन अवैतानिक रूप में ही किया जा रहा है। कागज़, छपाई, डाक आदि का जितना खर्च 'केरल हिन्दी प्रचार सभा' को वहन करना पड़ता है उसका एक अंश ही केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय की ओर से सहायता-स्वरूप मिलता है।

(8) 'केरल ज्योति' में प्रकाशन केलिए रचनाओं का चयन करते वक्त आप किन- किन बातों पर ध्यान देते थे?

'केरल ज्योति' केलिए सामग्री - संचयन करते समय एक दृष्टि यही रही कि केरल के सबन्ध में - उसकी संस्कृति, इतिहास, साहित्य, साहित्यकार इत्यादि को- समझने में सहायक रहे। आवरण पृष्ठों का चयन भी इस दृष्टि से किया जाता रहा। केरल के प्रतिष्ठित लेखकों के साथ-साथ केरल के उदीयमीन लेखकों को भी वरीयता दी जाती थी। हिन्दी प्रचार और हिन्दी अध्यापन को सुगम बनाने में सहायक सामग्री भी चयन किया जाता रहा।

(9) 'केरल ज्योति' के प्रत्येक अंक के पहले पृष्ठ के नीचे दायीं ओर यह सूचना छपी जाती है कि 'लेखकों द्वारा प्रकट किये गये मत उनके अपने हैं।' आपको असहमतिवाली कोई रचना आपने कभी प्रकाशित की है?

संभवतः नहीं।

(10) 'केरल ज्योति' केरल विश्वविद्यालय से मान्यता प्राप्त पत्रिका है। इस हिन्दी पत्रिका को विश्वविद्यालय से आसानी से मान्यता मिली?

केरल विश्वविद्यालय की मान्यता ही प्राप्त की जा सकी है, ऐसी मेरी याद है। इसमें कोई विशेष कठिनाई नहीं हुई।

(11) आपकी राय में केरल में एकहिन्दी दैनिक निकलेगा तो उसके सफल होने की संभावना है?

दो वर्ष पूर्व तिरुवनन्तपुरम से एक हिन्दी दैनिक निकला था। पर उसके तीन-चार अंक ही निकल पाए।

(12) केरल हिन्दी प्रचार सभा की पहली पत्रिका 'राष्ट्रवाणी' का कोई अंक आपने देखा है? आपकी राय में वह पत्रिका स्तरीय थी?

'राष्ट्रवाणी' के कुछ अंक देखे हैं। श्री के. वासुदेवन पिल्लैजी की संपादकीय टिप्पणियाँ सामयिक महत्व की रहा करती थीं। तत्कालीन मांग को ध्यान में रखते हुए इस पत्रिका में हिन्दी के अलावा मलयालम और तमिल को भी स्थान दिया जाता था। श्री कुन्नुकुषि़ कृष्णनकुट्टी, डॉ. के.पी. परमेश्वरन पिल्लै आदि की स्तरीय रचनाएँ उसमें प्रकाशित होती थीं। हिन्दी काव्यों के स्तरीय मलयालम काव्यानुवाद भी उसमें निकलते थे। वैसे, 'राष्ट्रवाणी' के पुराने अंक केरल हिन्दी प्रचार सभा के 'स्व. के. वासुदेवन पिल्लै ग्रंथालय' में सुरक्षित रखे गए हैं।

(13). केरल हिन्दी प्रचार सभा के मुद्रणालय को 'राष्ट्रवाणी मुद्रणालय' नाम पहली पत्रिका के स्मरणार्थ दिया है या 'राष्ट्र की वाणी' अर्थ में?

केरल हिन्दी प्रचार सभा के मुद्रणालय को 'राष्ट्रवाणी मुद्रणालय' नाम देने की एक प्रेरणा यह रही है कि वह सभा की प्रथम पत्रिका 'राष्ट्रवाणी' की स्मृति बनाये रखे। यों तो हिन्दी समस्त राष्ट्र की वाणी है ही। इस अर्थ में भी यह नाम स्वीकार्य लगा था।

(14) हिन्दी पत्रकारिता तथा रचनात्मक साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य केलिए 'केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा' की ओर से प्रदत्त 'गणेश शंकर विद्यार्थी पुरस्कार' जब प्राप्त हुआ तब आपकी भावना क्या थी?

कहाँ देश केलिए समर्पित गणेश शंकर विद्यार्थी और कहाँ यह अकिंचन! मुझे लगा कि अपने को इस पुरस्कार के अनुरूप बताने में बड़ी दूरी तैर करनी है।

(15) 'केरल ज्योति' पत्रिका के संस्थापक संपादक कौन थे?

संस्थापक संपादक ऐसे संपादक को कहते हैं, जो किसी पत्रिका के प्रकाशन की इतिश्री भी करता हो। इस अर्थ में 'केरल ज्योति' का कोई संस्थापक संपादक नहीं रहा। पत्रिका का प्रकाशन आरंभ किया 'केरल हिन्दी प्रचार सभा' ने। उन दिनों सभा की मंत्री थी श्रीमती जे. सरोजिनी अम्माजी। 'केरल ज्योति' के प्रथम संपादक थे विद्वान के. नारायणजी, जो हिन्दी के अच्छे प्रचारक और लेखक थे। उनकी कहानियाँ और अन्य रचनाएँ हिन्दी की कई प्रतिष्ठित पत्रिकाओं में प्रकाशित होती थीं।

(16) कौन - कौन - से व्यक्ति 'केरल ज्योति' के प्रबंध संपादक रहे?

प्रायः सभा के अध्यक्ष पदेन 'केरल ज्योति' के प्रबंध संपादक रहा करते थे। बाद को यह परंपरा कहीं विच्छिन्न हो गयी। डॉ. के. भास्करन नायरजी और डॉ. पी.के. नारायण पिल्लैजी, अधिवक्ता एस.वी. कुक्किल्लाया, प्रो. जे.जोसफजी तथा प्रो. के. केशवन नायरजी सभा के अध्यक्ष पद संभालते समय 'केरल ज्योति' के संपादन - प्रकाशन में विशेष मार्ग - दर्शन देते थे।

(17) 'केरल ज्योति' पत्रिका के संप्रतीक का भी ज़रा विवरण दे दें तो अच्छा होगा।

'केरल ज्योति' का अपना कोई संप्रतीक नहीं है। 'केरल हिन्दी प्रचार सभा' का संप्रतीक ही आवरण पृष्ठ पर मुद्रित रहता है, जिस पर 'जय हिन्द, जय हिन्दी' का नारा अंकित है।

- साक्षात्कारः 20 दिसंबर 2006

सही उत्तर चुनें

6. महात्मा गाँधी को पहली बार 'राष्ट्रपिता' कहकर किसने संबोधित किया?

(अ) पट्टेल

(आ) सुभाषचन्द्र बोस

(इ) जवहरलाल नेहरू

(ई) राजेन्द्र प्रसाद

7. महात्मा गाँधी को पहली बार 'राष्ट्रपिता' कहकर कब संबोधित किया गया?

(अ) 4 जून 1944 को सिंगप्पूर रेडियो से एक संदेश प्रसारित करते हुए।

(आ) नमक सत्याग्रह के समय।

(इ) दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा की स्थापना के समय।

(ई) दक्षिण अफ्रीका से गाँधीजी के लौट आने पर।

8. सन् 1969 से सन् 2002 तक 'केरल ज्योति' पत्रिका के संपादक कौन थे?

(अ) के.जी.बालकृष्ण पिल्लै

(आ) प्रो.डी.तंकप्पन नायर

(इ) विद्वान के. नारायण

(ई) कुन्नुकुषि़ कृष्णनकुट्टी

9. 'राजपाल एण्ड सन्स, नई दिल्ली' द्वारा प्रकाशित 'केरल' पुस्तक के लेखक कौन हैं?

(अ) डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर

(आ) डॉ.जी.गोपिनाथन

(इ) पी.नारायण

(ई) के.जी.बालकृष्ण पिल्लै **(शेष पृ.सं. 41)**

केरल के हिंदी वाङ्मय को डॉ.एन ई विश्वनाथ अय्यर का योगदान

♦ डॉ.बी. धन्या

डॉ. एन.ई.विश्वनाथ अय्यर पूरे हिंदी क्षेत्र में मशहूर तथा वहाँ के विभिन्न साहित्यक - सांस्कृतिक संगठनों द्वारा पुरस्कृत एवं सम्मानित केरलीय हिंदी लेखक हैं। वे केरल के विद्यानिवास मिश्र एवं केरलीय संस्कृति के ध्वजवाहक हैं। 'हिंदी ललित निबंध के दक्षिणी ध्रुव' के तौर पर भी वे सम्मानित हुए हैं।

स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद केरलीय हिंदी साहित्य में अपनी विद्वत्ता और प्रतिभा के बल पर अमिट छाप लगानेवाले महान हस्तियों में डॉ.अय्यर का नाम विशेष आदर से लिया जाता है। विलक्षण प्रतिभा और अप्रतिम व्यक्तित्व के धनी डॉ.अय्यर ने, पाँच-छह दशकों तक सफल प्रोफसर, शोध निर्देशक, कुशल लेखक, अनुभवी अनुवादक, अनुवाद चिंतक, आलोचक, जीवनीकार, ललित निबंधकार, सफल संगठक आदि कई रूपों में राष्ट्रवाणी हिंदी को अपना महान योगदान दिया है। वाणी के इस वरद पुत्र में विद्या और विनय का अपूर्व संगम देखने को मिलता है, जो अन्यत्र विरल है।

पालक्काटु जिले के नूरणी गाँव में जन्मे विश्वनाथ अय्यरजी की मातृभाषा तमिल थी। आपने केरल विश्वविद्यालय से संस्कृत में एम.ए, काशी विश्वविद्यालय से हिंदी में एम.ए तथा सागर विश्वविद्यालय से हिंदी में पीएच. डी की उपाधियाँ प्राप्त कीं। 'सागर विश्वविद्यालय' से हिंदी में पीएच.डी प्राप्त करनेवाला प्रथम दक्षिणात्य छात्र विश्वनाथ अय्यरजी रहा है।

डॉ. अय्यर का अध्यापकीय जीवन स्कूल में शुरू हुआ था। बहुत जल्दी ही आप तिरुवनंतपुरम यूनिवर्सिटी कॉलेज के प्राध्यापक बने। सन् 1963 में एरणाकुलम में केरल विश्वविद्यालय की एक शाखा शुरू हुई और वहाँ हिंदी में एम.ए. कक्षाओं का आरंभ हुआ, तो डॉ.अय्यर वहाँ प्राध्यापक नियुक्त हुए और जल्दी ही अपने वैदुष्य और प्राध्यापकी के बल पर प्रभारी विभागाध्यक्ष नियुक्त किये गये। सन् 1971 में जब कोच्चिन विश्वविद्यालय की स्थापना हुई तब डॉ.अय्यर वहाँ हिंदी के प्रथम आचार्य एवं अध्यक्ष तथा भाषा संकाय के डीन नियुक्त किये गये। इस प्रकार देखें तो यह समझने में किसी को कोई दिक्कत नहीं होगी कि डॉ अय्यर को अपने यौवन के दिनों में ही केरलीय हिंदी शिक्षण के सर्वोच्च पदों को अलंकृत करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ था।

'ललित निबंध' डॉ.अय्यर की प्रिय विधा है। ललित निबंध के क्षेत्र में आपने नये प्रतिमान स्थापित किये। आपके अधिकांश ललित निबंध केरल की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत से संबद्ध है। इस प्रकार आपने अपनी जन्मभूमि केरल की महिमा एवं गरिमा का गायन किया है। आपके लिखे चौंसठ ललित निबंध, पाँच संग्रहों में संकलित किये गये हैं। डॉ.अय्यर के ललित निबंध संग्रह ये हैं - 'शहर सो रहा है', 'उठता चाँद डूबता सूरज', 'फूल और काँटे','सीढ़ी और साँप' तथा 'घने केर तरु तले'। अपने निबंधों के

माध्यम से डॉ.अय्यर ने भारत के दक्षिणी छोर पर स्थित केरल की महिमा का वर्णन किया है तथा इसके द्वारा दक्षिण और उत्तर प्रदेशों के सांस्कृतिक समन्वय में अपना महत्वपूर्ण योगदान भी प्रदान किया है।

डॉ.अय्यर ने बालसाहित्य, जीवनी, आलोचना, साहित्येतिहास, प्रयोजनमूलक हिंदी आदि गद्य की मौलिक पुस्तकों का चयन किया है। आपकी प्रथम प्रकाशित गद्य रचना 'होनहार बालक और अन्य कहानियाँ'शीर्षक ग्रंथ है। इसमें दस बाल कहानियाँ संकलित की गयी हैं।

डॉ.अय्यर एक सफल जीवनीकार भी रहे हैं। उनकी लिखी दो जीवनियाँ पुस्तकाकार में प्रकाशित हुई हैं। वे हैं 'महाकवि रवींद्रनाथ' और 'विज्ञानयोगिनी'। दूसरी जीवनी में विश्वप्रसिद्ध महिला वैज्ञानिक मैडम क्यूरी को समाहित किया गया है।

आलोचक डॉ अय्यर के दो निबंध विशेष रूप से चर्चित हुए हैं। वे हैं 'प्राचीन कवि केशवदास' और 'तुलनात्मक साहित्य'। 'तुलनात्मक साहित्य' शीर्षक ग्रंथ डॉ.अय्यर की अमूल्य देन है, जिसमें हिंदी, मराठी और मलयालम भाषाओं की श्रेष्ठ रचनाओं के तुलनात्मक अध्ययन को प्रस्तुत किया गया है।

केरलीय जन जीवन और साहित्य पर भी अय्यरजी ने मौलिक रचनाएँ लिखी हैं। केरल की परंपरा, संस्कृति और सामाजिक जीवन से संबद्ध जनश्रुतियों, दंत कथाओं एवं लोक कथाओं को उत्तर भारतीय आर्य संस्कृति से अवगत कराना ही अय्यरजी का उद्देश्य रहा है। इस प्रकार के चार ग्रंथों की रचना डॉ.अय्यर द्वारा हुई है, जो केरल की सांस्कृतिक विरासत की प्रामाणिक दस्तावेज़ हैं। 'केरल की वीरगाथाएँ', 'केरल की जनकथाएँ', 'केरल की लोककथाएँ' तथा 'केरल' शीर्षक सांस्कृतिक ग्रंथों का महत्व वर्तमान संदर्भ में सर्वाधिक है।

'अभयकुमार की आत्मकहानी' डॉ अय्यर का एक विशिष्ट ग्रंथ है। इसे आत्मकथा और यात्रावृत्त दोनों विधाओं में समेटा जा सकता है। अभयकुमार एक व्यक्ति का नहीं, वरन् एक ट्यूरिस्ट बस का नाम है, जो केरल के कलातीर्थों, संग्रहालयों, संस्थाओं और शिक्षा केंद्रों की यात्रा करने केलिए प्रेरित करता है।

डॉ अय्यर ने केरल में हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार और यहाँ के हिंदी साहित्य के विकास से संबद्ध इतिहास ग्रंथों का चयन भी किया है। 'राष्ट्रभारती को केरल का योगदान' और 'केरल में हिंदी भाषा और साहित्य का विकास' दो ऐसे उत्कृष्ट ग्रंथ हैं।

डॉ.अय्यर एक कुशल अनुसंधानवेत्ता भी रहे हैं। 'केरल के प्रथम हिंदी गीतकार महाराजा स्वातितिरुनाल' और 'आधुनिक हिंदी काव्य और मलयालम काव्य' डॉ.अय्यर के दो विशेष महत्वपूर्ण ग्रंथ हैं।

डॉ.अय्यर द्वारा रचित गद्य रचनाओं में अनुवाद से संबद्ध सैद्धान्तिक ग्रंथ भी है। 'अनुवाद भाषाएँ समस्याएँ', 'अनुवादकला' और 'व्यावहारिक अनुवाद' आपके सैद्धांतिक ग्रंथ हैं। प्रथम ग्रंथ को 'भारतीय अनुवाद परिषद्, दिल्ली' द्वारा 'नाताली पुरस्कार' से सम्मानित किया गया है। डॉ.अय्यर बहुभाषाविद् रहे हैं। राजभाषा हिंदी के भी आप मर्मज्ञ थे। प्रशासनिक भाषा हिंदी पर आपके तीन ग्रंथ उपलब्ध होते हैं। वे हैं 'प्रशासनिक पत्र व्यवहार', 'कार्यालय कार्यविधि और पत्र व्यवहार' तथा व्यापारिक और प्रशासनिक पत्र व्यवहार'।

डॉ.अय्यर ने कई पुस्तकों का संपादन भी किया है। आपके द्वारा संपादित ग्रंथों की संख्या एक दर्जन से अधिक

है। उनमें प्रमुख हैं- 'गद्यांजली', 'काव्यसौरभ', 'कथातरंगिणी', 'गद्यविकास' और 'गद्य सुमन'।

बहुभाषाविद् डॉ.अय्यर के अनन्य पांडित्य और अप्रतिम श्रम कौशल का दृष्टांत उनके कोशकार रूप में देखा जा सकता है। आपके द्वारा संपादित चार कोशग्रंथ उपलब्ध हैं - 'मलयालम हिंदी व्यावहारिक कोश', 'भारतीय भाषा कोश', 'हिंदी-मलयालम व्यावहारिक लघु कोश' और 'मलयालम-हिंदी व्यावहारिक लघु कोश'।

डॉ.अय्यर द्वारा मलयालम से हिंदी में अनूदित काव्यग्रंथों में 'उज्जयिनी' नामक प्रबंध काव्य सर्वश्रेष्ठ है। इस ग्रंथ की प्रशंसा हिंदी के मूर्धन्य आलोचकों ने तहे दिल से की है। इस अतिविशिष्ट ग्रंथ के द्वारा डॉ.अय्यर ने मलयालम के ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता पद्मश्री ओ.एन.वी को पूरे हिंदी क्षेत्र में परिचित कराया है। यह भी नहीं आपने कवि ओ.एन. वी की उन्नीस चुनिंदी कविताओं का अनुवाद 'ओ.एन.वी की मलयालम कविताएँ' शीर्षक से प्रकाशित किया है।

अनुवादक अय्यर की एक विशेष खूबी यह है कि उन्होंने मलयालम के सर्वश्रेष्ठ छः उपन्यासों का अनुवाद हिंदी में किया है। वे नीचे दिये गये हैं -

लेखक	**मूलग्रंथ**	**अनुवाद**
पारप्पुरत्तु	अरनाषिकनेरम	आधी घड़ी
मलयाट्टूर रामकृष्णन	वेरुकल	जड़ें
सी.वी.रामनपिल्लै	रामराजा बहादूर	रामराजा बहादूर
आनंदन	मरणसर्टिफिकेट	मरणसर्टिफिकेट
पुनत्तिल कुंजब्दुल्ला	मरुन्न;स्मारक शिलकल्	दवा; स्मारक शिलाएँ

टी.पद्मनाभन की चुनिंदा बारह कहानियों का अनुवाद 'एक किशोरी फुलझडी-सी' नाम से डॉ अय्यर ने किया है।जो हिंदी क्षेत्र में एक लंबे अरसे तक चर्चा का विषय रहा।

डॉ.अय्यर ने साहित्येतर अनुवाद-कर्म भी किये हैं, जिसमें भी उन्हें साफल्य प्राप्त हुआ है। केरल की आध्यात्मिक आचार्या माता अमृतानंदमयी देवी की जीवनी 'उपदेशामृतम' नाम से और माताजी के भाषणों का अनुवाद 'जीवन रहस्य' नाम से डॉ. अय्यर द्वारा संपन्न हुआ है।

केरलीय हिंदी साहित्य के महान हस्ती डॉ.विश्वनाथ अय्यर को, अपनी विलक्षण प्रतिभा और हिंदी भाषा एवं साहित्य को प्रदान किये गये, अपने अथक प्रयास के उपलक्ष्य में, उत्तर भारत के लगभग सभी प्रान्तों के, शासकीय एवं गैर शासकीय पुरस्कारों एवं सम्मानों से नवाज़ा गया है। केंद्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों, मसलन 'केंद्रीय हिंदी निर्देशालय', 'केंद्रीय हिंदी संस्थान', 'भारतीय अनुवाद परिषद्' आदि संस्थानों से भी बड़े-बड़े पुरस्कार एवं सम्मान प्राप्त हुए हैं। सांस्कृतिक एवं भाषाई समन्वय के प्रोत्सानार्थ डॉ.अय्यर को राष्ट्रपति के करकमलों से भी समय - समय पर पुरस्कार ग्रहण करने का सुअवसर मिला है।

संदर्भ

मैं इनसे मिली -डॉ.आशाराणी व्योरा

'अनुशीलन' पत्रिका, 1980-81 अंक।

'केरलज्योति' पत्रिका अक्तूबर 1995, मार्च 1995, अगस्त 2006।

'अग्रतारा' पत्रिका, जनवरी 2001।

◆ असिस्टेंट प्रोफेसर

टी.एम.सरकारी

कॉलेज, मलप्पुरम्।

सुनीता जैन की कहानियाँ

♦डॉ. लक्ष्मी. एस.एस

हिंदी महिला रचनाकारों में सुनीता जैन की अपना अलग पहचान है। सुनीता जैन जी का व्यक्तित्व अद्वितीय है। उनका जन्म 13 जुलाई 1941 में अम्बाला में हुआ। उनकी माध्यमिक शिक्षा लुधियाना में हुई। उनको लेखन के प्रति लगाव बचपन से ही है, 'वीर अर्जुन' और 'दैनिक प्रताप' में अनेक रचनाएँ लिखीं तथा बाल पृष्ठों के बड़े पुरस्कार भी मिले। सुनीता जैन जी का विवाह 17 नवम्बर 1956 में डॉ.आदिखरलाल जैन जी से हुआ। कुछ समय बाद ही सुनीता जी अमरिका प्रस्थान कर गईं। अमेरिका में ही इनके एक बेटी अन्नू किरण तथा बेटे रविकान्त का जन्म हुआ।

श्रीमती सुनीता जैन की रचना-यात्रा 1962 में उपन्यासों से आरंभ हुई। उपन्यास के साथ कहानी, कविता, अनुवाद आदि अनेक विधाओं में उन्होंने कार्य किया। 'बोज्यू'(1964, कमलवीर प्रकाशन), 'सफ़र के साथी'(1966, पूर्वोदय प्रकाशन), 'बिन्दु'(1977, पराग प्रकाशन) आदि उनके प्रसिद्ध उपन्यास हैं। 'हम मोहरे दिन रात के'(1970, सुरुचि प्रकाशन), 'इतने बरसों बाद' (1977, पूर्वोदय प्रकाशन) आदि सुनीता जी की कहानियाँ हैं। आपने हिंदी साहित्य के साथ-साथ अंग्रेज़ी में भी अनेक उपन्यास, कहानियाँ तथा कविताएँ लिखी हैं। सुनीता जी को अनेक पुरस्कार भी मिले हैं- 1988 में 'रंगरति' कविता (1986, नेशनल प्रकाशन) को 'निराला नामित पुरस्कार' दिया गया। 1995 में 'सुलोचिना लेखिका सम्मान' मिला। 1996 में 'साहित्यकार सम्मान' (हिन्दी अकादमी, दिल्ली) से मिला। 1998 में 'महादेवी वर्मा सम्मान' और सन् 2004 में 'पद्मश्री' भी उन्हें मिले।

सुनीता जैन की कहानियाँ नारी जीवन के मार्मिक पहलुओं का सूक्ष्म वर्णन है। 'हम मोहर दिन रात के' नामक कहानी संग्रह (1970,सरुचि प्रकाशन) उनका प्रथम कहानी संग्रह है। 'इतने बरसों बाद'(1977, पूर्वोदय प्रकाशन) नामक कहानी संग्रह में लेखिका की पन्द्रह कहानियाँ संकलित हैं जो पाठकों को बहुत प्रभावित करती हैं। 'पाँच दिन'(2003, सार्थक प्रकाशन) कहानी संग्रह में आपकी आठ कहानियाँ संकलित है जो पाठकों को आकर्षित करती हैं।

सुनीता जी की कहानियों में परिवार एक प्रमुख इकाई है। परिवार समाज का एक अनिवार्य अंग है। परिवार साधारणतया पति, पत्नी और बच्चों के समूह को कहता है, पर दुनिया के अधिकांश भागों में वह सम्मिलित वासवाले रक्त सम्बन्धियों का समूह है।

दाम्पत्य जीवन

परिवार में दाम्पत्य सम्बन्ध को महत्वपूर्ण स्थान है। श्रीमती सुनीता जैन की कहानियों में सफल दाम्पत्य और असफल दाम्पत्य का चित्रण हुआ है। 'कमाई' कहानी की आशा और अवध का सफल दाम्पत्य है। अवध अमरीका में अपने परिवार के साथ रहता है। आशा गौड़ ब्राहम्ण होकर भी अमरीका के अस्पताल में नर्स - सहायिका का काम करती थी। दोनों के मन में काम

के प्रति इज़्ज़त है। 'महानगर' कहानी में विजयबाबू और उनकी पत्नी दोनों साथ-साथ अपना दायित्व निभाते हैं। विजयबाबू एक ज़िम्मेदार पति है, जब उनकी पोस्टिंग पिठौरगढ़ हुई थी, तब उस शहर में कोई चीज़ उपलब्ध नहीं थी। उनकी पत्नी सब समाकर गृहस्थी संभालती है। 'खटराग' कहानी की सुधा और 'हेम' आपस में झगड़ते ज़रूर हैं, लेकिन दोनों एक-दूसरे को बहुत चाहते हैं। 'पालना' कहानी में रजत और सुलक्षणा का सफल दाम्पत्य जीवन दिखाई देता है। यह पति-पत्नी निस्संतान थे, और वे अमरीका में रहते थे। रजत की माँ मिसेज़ नाथ एजेंट द्वारा एक छोटी बच्ची को अस्पताल से गोद लेती है। वह रजत और सुलक्षणा के ज़िन्दगी में आशा की किरण लाती है। आपसी प्रेम और सुःख-दुःख बाँटने की प्रबल इच्छा से ही दाम्पत्य सम्बन्ध सफल होता है।

पति-पात्नी के बीच तनाव, त्याग और समर्पण का अभाव दाम्पत्य सम्बन्धों को असफल बनाता है। 'परदेश' कहानी में इस प्रकार की समस्या उद्घाटित हुई है। जैक और मिम दोनों पति-पत्नी हैं। दोनों बच्चों के सामने ही झगड़ते हैं। यह सब देखकर बच्चे भी परेशान हो जाते हैं। मिम कहती है कि, "न्यूयोर्क स्टेट में तलाक इतनी कठिनाई से मिलता है, अन्यथा जल्दी ही उसका पीछा छूट गया होता। तलाक जब तक मिलता नहीं वह यूँ ही आकर हर शनिवार बच्चों को मिलने के बहाने उसे सालता रहेगा।"[1] इस तरह 'परदेस' कहानी में असफल दाम्पत्य का चित्रण हुआ है। 'भरोसा' कहानी में आशा का पति यतीन अपने ऑफिस की मिस शर्मा के साथ किताब प्रकाशित करता है। इस सिलसिले में उसे रोज़ाना मिस शर्मा के यहाँ जाना पड़ता है। वास्तव में यतीन और मिस शर्मा के बीच कुछ भी नहीं है, लेकिन आशा के मन में पति यतीन के प्रति संदेह है, और इसका बुरा असर उनके दाम्पत्य जीवन पर भी पड़ता है। 'मंगलसूत्र' कहानी में डोरा का विवाह बॉब के साथ हुआ था। वह इंजीनियरिंग में पढ़ता था डोरा दो जगह सुबह और शाम नौकरी करती थी।वह बच्चा चाहती थी और बॉब को बच्चे पसंद नहीं थे। इसी कारण मानसिक तनाव उपस्थित हो जाता है और दोनों अलग होने का निश्चय कर लेते हैं। 'बिन्दु' कहानी में कृष्णकान्त अपनी पत्नी बिन्दु को छोड़कर, बच्चे अजय को लेकर इंग्लैण्ड चला जाता है। फिर बिन्दु अपनी बुआ के साथ अमरीका जाती है। वहाँ कॉलेज के प्रोफेसर के रूप में बिन्दु काम करती है। कृष्णकान्त को दिल का दौरा पड़ने की खबर सुनकर बुआ भी बिन्दु से कहती है कि तुम्हें कृष्णकान्त के पास जाना चाहिए। 'पाँच दिन' जानकी और भास्कर की कहानी है, इसमें प्रोफेसर जानकी अपने छोटे बेटे मनु के साथ दिल्ली में रहती है। मनु अविवाहित है। बड़ा बेटा ललित अमरीका में है। बेटी मीरा शिकागो में रहती है।जानकी गर्मियों के दिनों में बड़े बेटे को मिलने अमरीका चली जाती है। दस दिन वहाँ रुकती है तो पति-पत्नी में झगड़े होते हैं। इस कहानी के ज़रिए लेखिका ने यह बताने की कोशिश की है कि आज के माहौल में अणु परिवार में पति-पत्नी भी बच्चों के सिवा घर में कोई नहीं चाहते हैं, वे स्वतन्त्र जीना चाहते हैं।

प्रेम

प्रेम एक पवित्र बंधन माना जाता है, जिसमें स्त्री-पुरुष दोनों बंधकर एक-दूसरे को धन्य मानते है। आज के ज़माने में स्त्री-पुरुष प्रेम करना चाहते हैं, लेकिन वे

बच्चे पैदा करना नहीं चाहते। सुनीता जी ने अपनी कहानियों में विवाहपूर्व प्रेम सम्बन्ध और विवाहोत्तर प्रेम सम्बन्ध के बारे में लिखा है। 'सिनिकल सुबोध' कहानी में सुबोध शोभा का विवाहपूर्व प्रेम-सम्बन्ध है। सुबोध और शोभा एक दूसरे से बेहद जुड़ जाते हैं, भीतर से चाहने लगते हैं। लेकिन शोभा मेजर के परिवार में पली थी। इस कारण वह पिता को इस बारे में कुछ कह न सकी। उसका विवाह दूसरे लड़के के साथ हो जाता है। बाद में सुबोध उसकी यादों में ही हमेशा खोया रहता है।

'कहानी की खोज में' कहानी में शुभा और विजय का विवाहपूर्व प्रेम-सम्बन्ध है। इस कहानी में सुमाल और शुभा पति-पत्नी हैं। एक दिन सुमाल ऑफिस से घर लौटने के बाद शुभा कहती है कि खाना आज बाहर करते हैं, दोनों खाना खाने के लिए लगूना में चले जाते हैं। वहाँ शुभा का पुराना आशिक विजय अपनी पत्नी के साथ दिखाई देता है। तब शुभा अपने अतीत में खो जाती है। 'परदेस' कहानी विवाहोत्तर सम्बन्ध पर आधारित है। रूपा और उसके पति के बीच दाम्पत्य सुख नहीं है। क्योंकि उसको रूपा के विवाहपूर्व सम्बन्धों के बारे में पता लग गया था। वह रूपा को उसकी बेटी से भी अलग कर देता है और उन दोनों का आपसी सम्बन्ध भी बिगड़ जाता है। 'इतने बरसों बाद' कहानी में प्रो.जॉर्ज और सहयोगी विवाहित प्राध्यापिका के विवाहोत्तर सम्बन्ध हैं। दोनों भी विवाहित हैं। प्रो.जॉर्ज और सहयोगी प्राध्यापिका दो-तीन दिन तक घर नहीं लौटती थीं।

आर्थिक विषमताएँ

अर्थाभाव की समस्या अनेक समस्याओं को जन्म देती है। अर्थाभाव के कई कारण हो सकते हैं जैसे - संयुक्त परिवार, जाति-व्यवस्था, रुढि-परम्परा, अज्ञान, बीमारी, दुर्घटनाएँ आदि। 'पार्वती जब रोएगी' कहानी में अर्थाभाव की समस्या को चित्रित किया गया है। धर्मपूरे गाँव में मनीन्द्र अपनी माँ, पिता, तीन बहनें और पार्वती (पत्नी) के साथ रहता था। उस गाँव से उसे नफ़रत थी, सख्त नफ़रत। वह गली में पैर रखते ही नाक पर रूमाल रख, सिकुड़ा-सिकुड़ा गन्दगी और खिड़कियों से फेंके गए कूड़े से बचता, आवारा गाय-भैसों से कतराता चलता था। यहीं वह पैदा हुआ था, यहीं खेला था, पर हर दिन के साथ उसकी घृणा यहाँ के लिए बढ़ती जाती थी। मनीन्द्र कहता है, 'फिर उसे उस धर्मपुरा में नाली के कीड़े-सी ज़िन्दगी में लौटना ही कब है, लौटेगा भी कैसे, और क्यों .... उतने में रिटायर्ड पिता, बीमार माँ को लेकर कहाँ रह सकेगा दिल्ली में। यहाँ से दस हज़ार रुपये कम्मो के ब्याह को भेज चुका है। दो-ढ़ाई सौ रुपये महीना तो यूँ ही भेज देता है।'[2] इस तरह मनीन्द्र अपनी व्यथा व्यक्त करता है। 'मीता' कहानी में आर्थिक समस्या व्यक्त हुई है। एक दिन मीता मैडम का पल्ला किसी लड़की ने छू लिया। मैडम कहकर वह रोने लगती है, तब मीता उसे रोने की वज़ह पूछती है। वह लड़की कहती है-"मैडम, मेरी फीस माफ करवा दीजिए। मेरे पापा बहुत बीमार हैं, काम पर नहीं जाते। माँ फीस नहीं दे सकेगी, तो मुझे पढ़ाई छोड़नी पड़ेगी।"[3]

सांस्कृतिक प्रभाव

संस्कृति का अर्थ है - संस्करण, परिमार्जन, शोधन, परिष्करण आदि। डॉ. जगदीश नारायण दुबे के मतानुसार 'मानव के रहन-सहन आचार-विचार, रीति-रिवाज़, ज्ञान-विज्ञान, साहित्य, कला, परम्परागत अनुभव,

जीवनयापन की पद्धति आदि के बोधक संस्कारों का नाम 'संस्कृति' है।'[4]

भारतीय संस्कृति की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विशेषता समन्वय की रही है। पाश्चात्य उपभोक्तावादी जीवन-दर्शन ने भारतीयों के सुख की व्याख्या बदल दी। युवा पीढ़ी स्वच्छंद जीवन का राग अलापने लगी। 'द्विधा' कहानी में सुधा का भैया अमरीका में लेक्चरर है और वहाँ के कॉलेज में पढ़ाने का कार्य करता है। इस कहानी के माध्यम से उन्होंने अमरीका के छात्र किस तरह कॉलेज में बैठते हैं, इसका सुन्दर अंकन किया है। सुधा का भैया कहता है "यहाँ विद्यार्थी भी खूब हैं, लड़के पैर मेज़ पर रख जूते मेरी ओर कर बैठते हैं, लड़कियाँ बिना रुके धूम्रपान करती हैं, चाकलेट - च्यूइंगम खाती रहती है, बैठने का ढंग बड़ा असभ्य लगता है, पर अब आदी हो चला हूँ।" इस कहानी में पाश्चात्य संस्कृति का वर्णन हुआ है। 'मंगल सूत्र' कहानी में इस बात का बहुत अच्छा चित्रण डोरा के माध्यम से हुआ है। डोरा पहले एलफ्रेड से प्यार करती है। एलफ्रेड सबसे खूबसूरत धनी लड़का था। उसने एक प्रेमिका के गर्व से उसे स्वयं को सौंपा। बाद में एलफ्रेड बदला। वह उसकी मुहब्बत से थक गया। वह नवीनता चाहता था। एलफ्रेड उसे छोड़ चला गया। तभी बॉब से परिचय हुआ। बॉब एलफ्रेड का दोस्त था और उसे उसपर आसक्ति थी। बाद में दोनों ने कंट्रेक्ट विवाह किया। बॉब को बच्चे पसन्द नहीं थे। इस कारण दोनों का सम्बन्ध - विच्छेद हो गया। 'बाट' कहानी में क्लब संस्कृति का चित्रण हुआ है। गुणमाला सरला की सास है। गुणमाला को तेज़ बुखार आया है। वह कहती है कि बहू, देख मुझे बुखार है क्या? सरला ने अपनी बेटी शीलू से थर्मामीटर लाने को कहा। शीलू खेल रही थी, वह खेलना छोड़कर नहीं आई, न सरला भी आयी। सरला आधुनिक विचारवाली पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित नारी है। वह सास को तेज बुखार होने के बाद भी पडोसवाले घर में ताश खेलने गयी।

नारी जीवन

प्राचीन युग में नारी को शिक्षा, अधिकार और सम्मान प्राप्त थे, परन्तु इसमें सामान्य नारी का स्थान अपवाद था। मध्ययुग तक नारी की दशा अत्यन्त शोचनीय थी। लेकिन धीरे-धीरे नारी ने विविध क्षेत्रों में प्रवेशकर अपनी कार्यक्षमता का परिचय दिया, परन्तु उसका शोषण आज भी ज़ारी है। 'पार्वती जब रोएगी' कहानी में पार्वती के पति द्वारा शोषण का चित्रण हुआ है। मनीन्द्र सोनिया के साथ विवाह करना चाहता है। पार्वती सीधी, सादी भारतीय संस्कृति में पली हुई लड़की है। सोनिया के साथ रहते समय उसे पार्वती की याद नहीं आती थी। "नहीं, उसे पार्वती से प्यार नहीं था। उस अनडेवलप्ड लड़की से भला किसे प्यार हो सकता था।"[6] मनीन्द्र की पत्नी पार्वती है। उसके होते हुए भी वह सोनिया से प्यार करके पार्वती का शोषण करता है। 'मोहरे' कहानी में पति द्वारा करुणा के शोषण को उजागर किया गया है। करुणा के पति ने अन्य महिला के मोह में घर छोड़ दिया। "वह रचना को तुरन्त वनस्थली से बुला लेगी अपने पास। क्यों होस्टल में भरती करवा दिया। इस डर से कि लोग यह न पूछें तुम्हारा पिता कहाँ है, कौन है?"[7]

श्रीमती सुनीता जैन ने अपनी कहानियों में सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक सभी परिस्थितियों का

चित्रण किया है। जीवन के हरेक पहलू को देखने का उनका अपना नया दृष्टिकोण उनकी कहानियों से व्यक्त हुआ है। सुनीता जैन की रचनाओं की विशेषता यह है कि हर एक रचना अपना अलग अस्तित्व लेकर पाठक के समक्ष उपस्थित होती है जो मार्मिक है और पाठकों के दिल को छू लेने में समर्थ और सक्षम भी है।

सहायक ग्रन्थ

1. सुनीता जैन अब तक (कहानी संकलन), संपादक- डॉ. कृष्णदेव शर्मा
2. सुनीता जैन का कथा - साहित्य - डॉ. प्रविण अंनतराव शिंदे
3. साठोत्तर हिंदी कहानी - डॉ.के.एम. मालती

संदर्भ

1. सुनीता जैन अब तक (कहानी), संपादक- डॉ. कृष्णदेव शर्मा पृ. 31
2. वही, पृ. 20
3. वही, पृ. 163
4. सुनीता जैन का कथा - साहित्य पृ. 137
5. सुनीता जैन, अब तक (कहानी), संपादक- डॉ. कृष्णदेव शर्मा पृ. 6
6. वही, पृ. 21
7. वही, पृ. 74

♦ सहायक अध्यापिका
एन.एस.एस कॉलेज,
पन्तलम, केरल राज्य।

सही उत्तर चुनें

(पृ.सं.33 के आगे)

10. 'केरल हिन्दी प्रचार सभा' के संस्थापक कौन थे?
(अ) एम.के.वेलायुधन नायर
(आ) आचार्य पी.जी.वासुदेव
(इ) के.वासुदेवन पिल्लै
(ई) विद्वान के. नारायण

11. 'राष्ट्रवाणी' किस संस्था की पत्रिका थी?
(अ) केरल हिन्दी प्रचार सभा
(आ) तिरुवितांकूर हिन्दी प्रचार सभा
(इ) केरल हिन्दी साहित्य मंडल
(ई) हिन्दी विद्यापीठ

12. 'अभयकुमार की आत्मकहानी' के लेखक कौन हैं?
(अ) इ.के. दिवाकरन पोट्टी
(आ) डॉ.एन.पी.कुट्टन पिल्लै
(इ) भारती विद्यार्थी
(ई) डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर

13. 'उज्जयिनी' काव्य के हिन्दी अनुवादक कौन हैं?
(अ) डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर
(आ) के.जी.बालकृष्ण पिल्लै
(इ) जे.आर.बालकृष्णन नायर
(ई) हरिहरन उण्णित्तान

(शेष पृ.सं. 46)

मोहन राकेश की कहानी 'परमात्मा का कुत्ता' में व्यंग्य

♦ डॉ.कमलानाथ.एन.एम

मोहन राकेश आधुनिक हिंदी साहित्य के जाने-माने प्रतिभा संपन्न साहित्यकार हैं। वे नाटककार, कहानीकार एवं उपन्यासकार के रूप में ख्याति प्राप्त हैं। उन्होंने अपना साहित्यिक जीवन एक कहानीकार की हैसियत से शुरू किया। उनकी पहली प्रकाशित कहानी भिक्षु है, जिसका प्रकाशन सन् 1943 में सरस्वती पत्रिका के द्वारा हुआ। नए बादल, आर्द्रा, सुहागिन, एक और ज़िंदगी, मलबे का मालिक, जानवर और जानवर, मवाली, अपरिचित, फौलाद का आकाश, मिस पॉल आदि उनकी प्रमुख कहानियाँ हैं। आषाढ़ का एक दिन, लहरों के राजहंस, आधे अधूरे , पैर तले की ज़मीन(अपूर्ण रचना, जिसे कमलेश्वर ने पूरा किया) आदि उनके नाटक हैं। नाटककार के रूप में हिंदी साहित्य जगत में प्रतिष्ठा 'आषाढ का एक दिन' के प्रकाशन के द्वारा हुई है। उनकी कहानियों में विषय वैविध्य है, समाज से सरोकार है। उनके लिए कहानी समाज के हरेक अन्याय को व्यंग्य के रूप में चित्रित करने का माध्यम है, जो उनके कहानी को कालजयी बनाते हैं।

'परमात्मा का कुत्ता' सरकारी विभागों की कार्य-पद्धति का पर्दाफाश करनेवाली व्यंग्य कहानी है। 'परमात्मा' का शाब्दिक अर्थ है 'श्रेष्ठ आत्मा'। परमात्मा वही है जो अच्छा-भला कार्य करता है, दूसरों को उसे देखकर यह महसूस होना चाहिए कि वही सच्चा परमात्मा है, जो दूसरों की सहायता केलिए ईश्वर का भेजा हुआ इंसान या ईश्वर के इच्छावाहक है। कुत्ते की यही विशेषता होती है कि वह अपने मालिक के वफ़ादार होकर सेवा करने में तत्पर रहता है। कुत्ता अपनी कार्यसिद्धि भौंकभौंककर करता है। प्रस्तुत कहानी के परमात्मा का कुत्ता स्वयं नायक है, जिसे नायक ने स्वीकार किया है। वह सरकारी अफ्सरों पर भौंक-भौंककर अपनी कार्य-सिद्धि करता है। नायक के शब्दों में "तुम सब भी कुत्ते हो, और मैं भी कुत्ता हूँ! फर्क इतना है कि तुम लोग सरकार के कुत्ते हो, हम लोगों की हड्डियाँ चूसते हो और सरकार की तरफ़ से भौंकते हो। मैं परमात्मा का कुत्ता हूँ। उसकी दी हुई हवा खाकर जीता हूँ, और उसकी तरफ से भौंकता हूँ। उसका घर इंसाफ़ का घर है। मैं उसके घर की रखवाली करता हूँ। तुम सब उसके इंसाफ़ की दौलत के लुटेरे हो। तुम पर भौंकना हमारा फर्ज़ है, मेरे मालिक का फ़रमान है। मेरा तुमसे असली वैर है। कुत्ते का कुत्ता बैरी होता है। तुम मेरे दुश्मन हो, मैं तुम्हारा दुश्मन हूँ। मैं अकेला हूँ, इसलिए तुम सब मिलकर मुझे मारो। मुझे यहाँ से निकाल दो। लेकिन मैं फिर भी भौंकता रहूँगा। तुम मेरा भौंकना बंद नहीं कर सकते। मेरे अंदर मेरे मालिक का नूर है, मेरे वाहगुरुका तेज है। मुझे जहाँ बंद कर दोगे, मैं वहाँ भौंकूँगा और

भौंक-भौंककर तुम सबके कान फाड़ दूँगा। साले, आदमी के कुत्ते, जूठी हड्डी पर मरनेवाले कुत्ते, दुम हिला-हिलाकर जीनेवाले कुत्ते!..."[1]

'परमात्मा का कुत्ता' कहानी शुरुआत से लेकर अंत तक कमीश्नर साहब के कार्यालयीन वातावरण में घटित होती है। 'परमात्मा का कुत्ता' कहानी का नायक एक आम आदमी का एक प्रतिनिधि है, जिसने उचित कार्रवाई की प्रतीक्षा में सरकार को दो साल पहले ही अर्जी दी है जिसपर सरकारी अफ्सरों की लापरवाही की वज़ह से अभी तक कार्रवाई नहीं हुई। कहानी में पात्रों का कोई खास नाम तो नहीं, नाम से बढ़कर पद एवं पदनाम मुख्य है। जैसे अर्जीनबीस, अर्जियाँ टाइप करनेवाला , कमीश्नर, चपरासी आदि । इसके अलावा अज़ीज़ साहब और सुरजीतसिंह वल्द गुरमीतसिंह भी पात्र के रूप में आते हैं। लेकिन इनकी कोई अलग भूमिका नहीं है, ये सरकारी अफ्सरों के तौर पर भूमिका निभाती है। इस कहानी का प्रत्येक पात्र टाइप पात्र है । ये पात्र लेखक के तत्कालीन समय में ही नहीं आज भी, अभी भी, कल भी हमारे समाज में सरकारी दफ़्तरों में अपने न्याय केलिए भौंकता नज़र आएँगे।

दफ़्तर में अर्जियाँ लेकर आनेवाले जवान से लेकर बूढ़े तक भी हैं । इस कहानी में आनेवाली बुढ़िया तो सत्तर-पचहत्तर की है, जिसका सिर काँप रही थी, चेहरा झुर्रियों से भरा था। लोगों के पूछने पर वह बताती है कि अपने लड़के के मरने के बाद उसके नाम एलॉट हुई ज़मीन की हकदार हो जाती है कि नहीं यह जाँचने आयी है जिससे यह व्यक्त है कि चाहे बुढ़िया और बुढ़िया हो जाए या मर जाए तो भी ये सरकारी अफ्सरों की कार्रवाई में कोई बदलाव नहीं आएगा। वे जैसा का तैसा आराम में अपने निजी कार्यों में, मनोरंजन में खोए रहेंगे। लेखक ने लिखा है- "अंदर हॉल-कमरे में फाईलें धीरे-धीरे चल रही थीं। दोचार बाबू बीच की मेज़ के पास जमा होकर चाय पी रहे थे। उनमें एक दफ़्तरी काग़ज पर लिखी अपनी ताज़ा गज़ल दोस्तों को सुना रहा था और दोस्त इस विश्वास के साथ सुन रहे थे कि वह ज़रूर बीसवीं सदी के किसी पुराने अंक में से उड़ाई है।"[2] दफ्तर के ये कर्मचारी तब कार्य करता है जब कमीश्नर साहब के आने की खबर पाते हैं मात्र दिखाने केलिए। फाइल दफ्तर के अंदर ही एक स्थान से दूसरे स्थान में जाने पर भी फाइल की कार्रवाई नहीं होती। फाइल के आते देख वहाँ का अफ्सर पाँच रुपए लेकर चाय पीनेवालों की जमघट में शामिल हो जाता है।

कमीश्नर साहब के सीट पर आनेवाले फाइलों पर हस्ताक्षर करने में उतना वक्त नहीं लगता जितना कर्मचारियों के द्वारा लगाते हैं। कमीश्नर एक दौर में ढेर सारे फाइलों में हस्ताक्षर करते हैं। कमीश्नर हस्ताक्षर करने के बाद अपनी निजी कार्यों में खो जाते हैं। दूसरे कर्मचारियों के कामों पर नज़र नहीं डालता। यानी कर्मचारियों को कामों पर कार्यरत कराने केलिए, कुछ करने केलिए तैयार नहीं हैं, दफ़्तर के बाहर अर्जी देनेवालों की भीड़ जमी है फिर भी। अर्जीवाला बड़े शांत होकर कई दिन, कई महीने, कई साल तक समाधान की प्रतीक्षा में हैं, लेकिन दफ़्तर के अंदर ही एक फाइल एक स्थान से दूसरे स्थान में पहुँचने पर महीनों लग जाता है।

अर्जीवालों की भीड़ में आगे चार नए चेहरे एक अधेड़ उम्र का आदमी, बड़ी उम्र की स्त्री, एक

जवान लड़की और एक दुबला-सा लड़का शामिल होने पर हलचल मच गयी। उस अधेड़ उम्रवाला आदमी सबका ध्यान आकर्षित करते हुए ज़ोर से अपने घुटने पर हाथ मारकर बतियाने लगता है - "सरकार वक्त ले रही है? दस-पाँच साल में सरकार फैसला करेगी कि अर्जी मंजूर होनी चाहिए या नहीं। साले, यमराज भी तो हमारा वक्त गिन रहा है। उधर यह वक्त पूरा होगा और इधर तुमसे पता चलेगा कि हमारी अर्जी मंजूर हो गई है।"[3] उस आदमी के हरेक शब्द में सरकारी अफ्सरों के प्रति, वहाँ की कार्रवाई के प्रति तीखा व्यंग्य है। दूसरों की ज़िंदगी कुछ भी हो जाए, कैसे भी बरबाद हो जाए इन सरकारी अफ्सरों को उनकी फिक्र नहीं है, वे आपे की खुशी में, मनोरंजन में सीमित हैं।

भीड़ का वह आदमी सरकारी कार्यालयों की पोल खुलनेवाली बातें करता है। जैसे-" इस कमरे से उस कमरे में अर्जी के जाने में वक्त लगता है। इस मेज़ से उस मेज़ तक जाने में भी वक्त लगता है! सरकार वक्त ले रही है! लो, मैं आ गया हूँ, आज यहीं पर अपना सारा घरबार लेकर। ले लो जितना वक्त तुम्हें लेना है ...! सात साल की भुखमरी के बाद सालों ने ज़मीन दी है मुझे सौ मरले का गड्ढा! उसमें क्या मैं बापदादों की अस्थियाँ गाड़ूँगा? अर्जी दी थी कि मुझे सौ मरले की जगह पचास मरले दे दो, लेकिन ज़मीन तो दो! मगर अर्जी दो साल से वक्त ले रही है! मैं भूखा मर रहा हूँ और अर्जी वक्त ले रही है!"[4] उस व्यक्ति की इन बातों में आर्थिक और मानसिक विषमता निहित है। अपनी इस विषमता के कारण वह निचले से निचले स्तर तक गिरने केलिए भी तैयार है। शोर सुनकर आनेवाले चरपासी से वह डरता नहीं, बल्कि बाकी भीड़ सहम हो जाती है । चपरासी मिस्टर संबोधन करके उससे बाहर निकलने को कहने पर भी वह डटकर चपरासी का सामना करते हुए व्यंग्यात्मक ढंग से कहता है-"मिस्टर आज यहाँ का बादशाह है । पहले मिस्टर देश के बेताज बादशाहों की जय बुलाता था। अब वह किसी की जय नहीं बुलाता । अब वह खुद यहाँ का बादशाह है... बेताज बादशाह, उसे कोई लाज-शरम नहीं है। उस पर किसी का हुक्म नहीं चलता । समझे, चपरासी बादशाह?"[5] वह बादशाह शब्द का प्रयोग बारबार ज़ोर लगा-लगाकर करता है। बादशाह वही है जो प्रत्येक प्रदेश का शासन कर सके, रक्षा कर सके। यहाँ भीड़ में से कोई आवाज़ उठाता नहीं, उस आदमी के अलावा। भीड़ के सभी लोगों केलिए एक ही आवाज़ थी, उस आदमी की, रक्षक के रूप में। उस आवाज़ में भीड़ के सभी जनों की वेदना निहित है। चपरासी उसे पुलिस के हवाले करवाएगी, यह धमकी देने पर भी वह हिलता नहीं बल्कि वह कहता है- "तेरी पुलिस मेरी बादशाही निकालेगी? तू बुला पुलिस को! मैं पुलिस के सामने नंगा हो जाऊँगा और कहूँगा कि निकालो मेरी बादशाही! हममें से किस किसकी बादशाही निकालेगी पुलिस? ये मेरे साथ तीन बादशाह और हैं। यह मेरे भाई की बेवा है उस भाई की, जिसे पाकिस्तान में टाँगों से पकड़कर चीर दिया गया था। यह मेरे भाई का लड़का है, जो अभी तपेदिक का मरीज़ है और यह मेरे भाई की लड़की है, जो अब ब्याहने लायक हो गई है। इसकी बड़ी कुंवारी बहन आज भी पाकिस्तान में है। आज मैंने इन सबके बादशाही दे दी है। तू ले आ जाकर अपनी

पुलिस, कि आकर इन सबकी बादशाही निकाल दे । कुत्ता साला !..."[6] चपरासी का गुस्सा बढ़ जाता है। वह उस आदमी की बाँह पकड़कर घसीटता है कि वहाँ का शोर सुनकर अंदर से एक अफ्सर आकर हलचल शांत करता है। कुत्ता शब्द का प्रयोग गाली के रूप में सिर्फ चपरासी केलिए नहीं करता, बल्कि अंदर जो काम होने पर भी बेकाम रहते सभी अफ्सरों केलिए करता है। अपने केलिए भी वह कुत्ते शब्द का इस्तेमाल करता है। वह परमात्मा का कुत्ता है। परमात्मा का कुत्ता अच्छी तरह से जानता है कि सरकारी कर्मचारीवाले कुत्ते पर भौंकने से ही अपना काम हो जाएगा।

इतने सब सुनने पर उन सरकारी अफ्सरों का कान फट जाता है। इसलिए अंदर के सरकारी अफ्सर बाहर निकलकर उस आदमी से चुप रहने की विनती करता है और उसका नाम और अर्जी के बारे में पूछने पर वह बताता है कि "मेरा नाम है, बारह सौ छब्बीस बटा सात ! मेरे माँ-बाप का दिया हुआ नाम खा लिया कुत्तों ने ! अब यहीं नाम है जो तुम्हारे दफ्तर का दिया हुआ है। मैं बारह सौ छब्बीस बटा सात हूँ ! मेरा और कोई नाम नहीं है। मेरा यह नाम याद कर लो। अपनी डायरी में लिख लो। वाहगुरु का कुत्ता बारह सौ छब्बीस बटा सात !"[7] नाम से भी परे उस फाइल नंबर का महत्व है। उस फाइल की कार्रवाई में उसकी पूरी ज़िंदगी आधारित है। फाइल की कार्रवाई में जितने वक्त लगेंगे उतनी उसकी ज़िंदगी भी बरबाद होने की संभावना है।

अफ्सर फाइल नंबर पूछने पर भी कार्रवाई जल्दी नहीं करता, बल्कि कल या परसों आने को कहेगा और यह भी कहेगा कि तकरीबन पूरी हो चुकी है। यह सुनकर अफ्सर पर नायक यह कहकर बरस पड़ता है कि "तकरीबन पूरी हो चुकी है। और मैं खुद भी तकरीबन पूरा हो चुका हूँ । अब देखना यह है कि पहले कार्रवाई पूरी होती है कि पहले मैं पूरा होता हूँ! एक तरफ सरकार का हुनर है और दूसरी तरफ परमात्मा का हुनर है । तुम्हारा तकरीबन अभी दफ्तर में ही रहेगा और मेरा तकरीबन कफन में पहूँच जाएगा। सालों ने सारी पढ़ाई खर्च करके दो लफ़्ज़ ईजाद किए हैं शायद और तकरीबन ! शायद आपके काग़ज ऊपर चले गए हैं..."[8] ये सब सुनने पर भी अफ्सर लोगों के मन में मामला निपटाने का विचार नहीं रहे। वे वहाँ आराम-से रहने लगे। दो-तीन आदमी उस आदमी को दफ्तर से बाहर कर दिया। फिर भी वह चुप रहनेवालों से नहीं थे, भीड़ में से आवाज़ निकालते रहे। हलचल बढ़ जाने पर कमीश्नर को खुद कमरे से बाहर आना पड़ा। कहने पर कमीश्नर से उसने कहा कि गड्ढ़े की जगह नयी ज़मीन एलॉट कराने के संबंध में अर्जी दी है। कमीश्नर फाइल लेकर उस आदमी को अपने कमरे में आने को कहा आधा ही घंटे में सबकुछ ठीक हो जाता है। वह मुस्कराकर यह कहते हुए बाहर निकलता है कि "चूहों की तरह बिटर-बिटर देखने से कुछ नहीं होता। भौंको, भौंको सब के सब भौंको ! अपनेआप सालों के कान फट जाएँगे। भौंको कुत्तो, भौंको !..."[9] इतने सब होने पर भी भीड़ की स्थिति पहले से शांत दिखाई दी यानी नायक के समान आवाज़ उठाने केलिए कोई आगे नहीं आया। कार्यालय में कर्मचारियों का काम भी पहले जैसा था। सरकारी अफ्सरों में स्फूर्ति तब आ जाती है जब आम आदमियों के द्वारा प्रतिषेध की आवाज़ निकलती है।

हरेक आदमी का सहन करने की भी एक सीमा होती है। जब वह सीमा पार करेगी तब आदमी आम आदमी नहीं रह जाता। चाहे कुछ भी हो जाए आपे से बाहर आकर डटकर किसी भी संदर्भ का सामना करने की शक्ति हासिल करता है। ज़ाहिर है कि यहाँ का नायक अपनेलिए न्याय मिलने तक भौंकता रहता है । अंत में वह विजय हासिल करके बड़े रौब से वहाँ से निकलता है। उनका यह चलन दूसरों केलिए प्रेरणा होना चाहिए । वह भी यह चाहता है कि हरेक आदमी आम आदमी की तरह चुप रहके जीना नहीं चाहिए अपनी आवश्यकताओं केलिए आवाज़ उठाना ही चाहिए। ज़ाहिर है कि मोहन राकेश का व्यंग्य कालातीत नहीं है। समाज आज भी, कल भी उसका शिकार बनता रहेगा ताकि सावधान रखना है ।

संदर्भ

1. हिंदी की प्रतिनिधि कहानिया, संपादक-श्री मार्कण्डेय;परमात्मा का कुत्ता, मोहन राकेश; गायत्री पब्लिकेशन्स, माकिल सेन्टर, जी.एस.रोड़ कोट्टयम, केरल, 2003, पृ.सं.70
2. वही; पृ.सं.67
3. वही; पृ.सं.69
4. वही ।
5. वही ।
6. वही; पृ.सं.69-70
7. वही; पृ.सं.70
8. वही; पृ.सं.71
9. वही; पृ.सं.72

हिंदी अध्यापिका
जी.एच.एस.उत्तरमकोट, इरुवेली।
तिरुवनन्तपुरम ।

सही उत्तर चुनें

(पृ.सं.41 के आगे)

14. श्री.के.जी.बालकृष्ण पिल्लै का जन्म स्थान कहाँ है?

(अ) तिरुवनन्तपुरम

(आ) कोल्लम

(इ) आलप्पुष़ा।

(ई) कोट्टयम

15. 'सारस्वद प्रदक्षिणा' के प्रणेता कौन हैं?

(अ) डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर

(आ) के.जी.बालकृष्ण पिल्लै

(इ) जे.आर.बालकृष्णन नायर

(ई) हरिहरन

सही उत्तर

(1) ई (2)आ (3) अ (4) आ (5) ई
(6) अ (7) ई (8) आ (9) अ (10) इ
(11)आ (12) ई (13) अ (14) इ (15) अ

सूचना

NET (हिन्दी) तथा Spoken Hindi की कक्षाओं में प्रवेश पाने को इच्छुक व्यक्ति संपर्क करें -

फोन : 9946253648, 0471 - 2332468

हिन्दी की समर्थक महिला
स्वर्गीय श्रीमती सुषमा स्वराज

♦ डॉ.पी.लता

श्रीमती सुषमा स्वराज का जन्म 14 फरवरी 1952 में अंबाला छावनी में हुआ। उन्हें वर्ष 2014 में भारत की पहली महिला विदेश मंत्री होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ।सुषमा स्वराज की हिन्दी पर बड़ी शानदार पकड़ थी। उनकी हिंदी में तत्सम शब्द अधिक होते थे। फिर भी उनकी भाषा सहज और प्रवाही थी। विदेश मंत्री रहते हुए सुषमा स्वराजजी ने अपने एक चर्चित भाषण में सितम्बर 2016 में संयुक्त राष्ट संघ में हिन्दी में ही भाषण दिया था। उनके इस भाषण की पूरे देश में चर्चा हुई थी। हिन्दी को संयुक्त राष्ट्र संघ की आधिकारिक भाषा बनाने के लिए भी उन्होंने अनेक प्रयत्न किए। संस्कृत से भी उनका विशेष प्रेम था। वे सदा संस्कृत में शपथ लेतीं थीं। उन्होंने अनेक अवसरों पर संस्कृत में भाषण दिया। सन् 2012 में साउथ इंडिया एड्युकेशन सोसायटी ने सुषमाजी को पुरस्कार दिया, जो मुंबई में सम्पन्न हुआ। इसमें संस्कृत के अनेक विद्वान आए थे। सम्मान-प्राप्ति के बाद जब भाषण देने की बारी आई, तो सुषमाजी ने बोलने के लिए संस्कृत को चुना। सम्मान में जो धनराशि मिली थी, वह संस्था को लौटाते हुए बोलीं कि संस्कृत के ही काम में वह पैसा लगा दें। इसी प्रकार जून 2015 में 16 वाँ विश्व संस्कृत सम्मेलन बैंकोक में हुआ, जिसकी मुख्य अतिथि सुषमा स्वराज थीं। उन्होंने पाँच दिन के इस सम्मेलन का उद्घाटन भाषण संस्कृत में दिया था।

हिन्दी भाषा को भावनात्मक धरातल से उठाकर एक ठोस और व्यापक स्वरूप प्रदान करने के उद्देश्य से तथा यह रेखांकित करने के उद्देश्य से कि 'हिन्दी' साहित्य की भाषा ही नहीं, ज्ञान-विज्ञान की भाषा के रूप में भी अग्रसर होने में सक्षम है, भारत सरकार द्वारा 'विश्व हिन्दी सम्मेलन' की संकल्पना की गयी। इस संकल्पना को सन् 1975 में नागपुर (भारत) में आयोजित प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन में मूर्त रूप दिया गया। प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन का आदर्श वाक्य था, 'वसुधैव कुटुम्बकम', जिसका अर्थ है 'धरती ही परिवार' है। हिन्दी भारतीयों के संस्कार की भाषा है। अतः हिन्दी बोलनेवाले तथा हिन्दी माध्यम से काम करनेवाले व्यक्तियों में सहज ही विश्व बन्धुत्व की भावना रहती है। 'विश्व हिन्दी सम्मेलन' का आयोजन भारत सरकार के विदेश कार्य मंत्रालय द्वारा किया जाता है।

श्रीमती सुषमा स्वराज

अब तक 11 विश्व हिन्दी सम्मेलन संपन्न हुए। इनमें 10 वाँ और 11 वाँ सम्मेलन तत्कालीन विदेशकार्य मंत्री श्रीमती सुषमा स्वराज के नेतृत्व में चलाये गये। ये दोनों सम्मेलन सुषमाजी की संगठन क्षमता प्रमाणित करनेवाले थे। हिन्दी क्षेत्र में काम करनेवाले व्यक्ति उन्हें कभी भूल नहीं सकते।

भारत की हृदय स्थली मध्यप्रदेश की राजधानी भोपाल में एक विशाल मंच पर त्रिदिवसीय (10-12 सितंबर, 2015) **10 वाँ 'विश्व हिन्दी सम्मेलन'** संपन्न हुआ। भोपाल स्थिल 'माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय' सम्मेलन की भागीदार संस्था थी। सम्मेलन स्थल को 'माखनलाल चतुर्वेदी नगर' नाम दिया गया था, जो भव्य और आकर्षक ढंग से सजाया गया था, जहाँ करीब साठ हज़ार वर्गफुट का विशाल पंडाल बनाया गया था। सम्मेलन में 29 देशों से प्रतिनिधियों ने हिस्सा लिया।

दसवें सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में 'सम्मेलन प्रस्तावना' श्रीमती सुषमा स्वराज (माननीय विदेश मंत्री व प्रवासी भारतीय कार्य मंत्री) ने की। उन्होंने कहा - "पिछले नौ सम्मेलनों की तुलना में इसका स्वरूप काफ़ी बदला है। पहले के सभी सम्मेलन भाषा की जगह साहित्य पर केन्द्रित होते थे, हमने इसे भाषा केन्द्रित बनाया है।" सुषमाजी ने इस पर ज़ोर दिया कि यह सम्मेलन हिन्दी भाषा के संरक्षण में निर्णायक होगा। सम्मेलन में चर्चा का मुख्य विषय था - 'हिन्दी जगत्: विस्तार एवं संभावनाएँ'। पाँच अलग-अलग सभागारों - रोनाल्ड स्टुअर्ट मेक्ग्रेगर सभागार, अलेक्सेई पेत्रोविच वरन्निकोव सभागार, विद्यानिवास मिश्र सभागार, कवि प्रदीप सभागार, राजेन्द्र माथुर सभागार आदि - में मुख्य विषय के अंतर्गत 12 उपविषयों में 28 समानांतर सत्र चलाये गये। उपविषय इस प्रकार थे - गिरमिटिया देशों में हिन्दी, विदेशों में हिन्दी शिक्षण-समस्याएँ और समाधान, विदेशियों केलिए भारत में हिन्दी अध्ययन की सुविधा, अन्य भाषा भाषी राज्यों में हिन्दी, विदेश नीति में हिन्दी, प्रशासन में हिन्दी, विज्ञान क्षेत्र में हिन्दी, संचार एवं सूचना प्रौद्योगिकी में हिन्दी, विधि एवं नयाय क्षेत्र में हिन्दी और भारतीय भाषाएँ, बाल साहित्य में हिन्दी, हिन्दी पत्रकारिता और संचार माध्यमों में भाषा की शुद्धता, देश और विदेश में प्रकाशनः समस्याएँ और समाधान, गैर हिन्दी राज्यों में हिन्दी आदि। इन समांतर सत्रों में जो विषय-प्रस्तुतियाँ हुई थीं, उनकी रिपोर्ट समापन सत्र में प्रस्तुत की गयी।

लघु भारत कहे जानेवाले 'मॉरीशस' में 18-20 अगस्त 2018 को **11 वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन** मॉरीशस सरकार (शिक्षा एवं मानव संसाधन, तृतीयक शिक्षा एवं वैज्ञानिक अनुसंधान मंत्रालय, मॉरीशस सरकार) के सहयोग से चलाया गया । विश्व हिन्दी सम्मेलन के आयोजन में एक देश को सहयोगी बनाना पहली बार है।हिन्दी का यह महाकुंभ - 11वाँ विश्व हिन्दी सम्मेलन - मॉरीशस के 'स्वामी विवेकानन्द अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन केन्द्र, पाई' में संपन्न हुआ, जिसे 'गोस्वामी तुलसीदास नगर' नाम दिया गया था। यह स्थान मॉरीशस की राजधानी 'पोर्टलुईस' से लगभग 6.6 कि.मी (वाहन से 15 मिनट का समय) की दूरी पर स्थित है। यहाँ 'अभिमन्यु अनत मुख्य सभागार' में सम्मेलन का उद्घाटन समारोह पूवाह्न 10.00 बजे से शुरू हुआ, जिसमें सुषमाजी भी शामिल थीं। 11 वें विश्व हिन्दी सम्मेलन के पिछले दिन (17 अगस्त 2018 को) शुक्रवार शाम को 5.30 बजे गंगा तालाब में सम्मेलन की सफलता केलिए विशेष 'गंगा आरती' की गयी । 'गंगा आरती' का नेतृत्व श्रीमती सुषमा स्वराज (विदेश कार्य मंत्री, भारत सरकार) तथा प्रवीण कुमार जगन्नाथ (प्रधान मंत्री, मॉरीशस) को करना चाहिए था। लेकिन 16

अगस्त 2018 के शाम को भारत के पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी का निधन हो जाने के कारण सुषमाजी 17 अगस्त 2018 को मॉरीशस पहुँच नहीं सकीं। अतः श्रीमती मृदुला सिन्हा (राज्यपाल, गोवा) श्री केसरीनाथ त्रिपाठी (राज्यपाल, पश्चिम बंगाल), श्री वी. के. सिंह (पूर्व विदेश राज्य मंत्री, भारत सरकार), श्री एम. जे. अकबर (विदेश राज्य मंत्री, भारत सरकार) आदि ने 'गंगा आरती' को नेतृत्व दिया।

ग्यारहवें सम्मेलन के उद्घाटन सत्र में सुषमाजी ने कहा कि हिन्दी को बढ़ावा देने की ज़िम्मेदारी भारत की है। उनके मत में 11 वें विश्व हिन्दी सम्मेलन में दो भाव एक साथ उभर रहे हैं - शोक भाव और संतोष भाव। उनका मतलब भारत के पूर्व प्रधान मंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के 16 अगस्त 2018 शाम को निधन से सम्मेलन में छाये हुए शोक भाव तथा विविध राष्ट्रों के हिन्दी प्रेमी व्यक्तियों की अटलजी को श्रद्धांजली अर्पित करने केलिए उपस्थिति से उद्भूत संतोष भाव से था । 'विश्व हिन्दी सम्मेलन' तीन बार भारत में, दो बार मॉरीशस में, दो बार गिरमिटिया देशों में, एक बार अमरीका में, एक बार ब्रिटन में और एक बार दक्षिण अफ्रीका में चलाये गये। 11 वाँ सम्मेलन मॉरीशस में संपन्न हुआ।

'विश्व हिन्दी सम्मेलन' पर सकारात्मक दृष्टिकोण से 10 वें और 11 वें सम्मेलनों की संयोजिका श्रीमती सुषमा स्वराज ने कहा "हमने विश्व हिन्दी सम्मेलनों की अनुशंसाओं के अनुपालन पर खास ध्यान दिया है। हर तीन महीने में अनुशंसा अनुपालन समिति की बैठक होती है। पिछली अनुशंसाओं को 'भोपाल से मॉरीशस' शीर्षक से पुस्तक रूप में प्रकाशित किया गया है।" सुषमाजी ने इस बात पर भी प्रतिभागियों का ध्यान दिलाया कि पिछले हर सम्मेलन में प्रमुख दो प्रस्ताव पारित होते रहे । एक यह कि 'मॉरीशस में विश्व हिन्दी सचिवालय का भवन हो'। इस प्रस्ताव का अनुपालन हुआ है कि मार्च 2018 में मॉरीशस में 'विश्व हिन्दी सचिवालय' के भवन का उद्घाटन भारत के माननीय राष्ट्रपति रामनाथ कोविन्दजी द्वारा किया गया। दूसरा प्रस्ताव हिन्दी को 'संयुक्त राष्ट्र संघ' की आधिकारिक भाषा बनाने का रहा है, जिसका अनुपालन नहीं हुआ है। इस बात में मुख्य समस्या यह है कि इसका समर्थन करनेवाले देशों को संबन्धित व्यय वहन करना पड़ेगा । सुषमाजी ने कहा कि यदि खुद भारत को व्यय वहन करना होता तो 400 करेड़ रुपये देकर भी उसे हासिल कर लेता । सन् 1997 में वर्धा में 'महात्मा गाँधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्वविद्यालय' की स्थापना हुई तो 'विश्व हिन्दी विद्यापीठ' की स्थापना रूपी संकल्पना भी साकार हुई।

सुषमाजी ने 11 वें विश्व हिन्दी सम्मेलन के प्रतिभागियों से यह आशा की कि हर शुक्रवार को प्रसारित होनेवाले 'यू. एन. रेडियो साप्ताहिक हिन्दी बुलेटिन' को अधिकाधिक व्यक्ति सुनें, ताकि उसके दैनिक प्रसारण की राह आसान हो।

'11 वें विश्व हिन्दी सम्मेलन' के विषय के महत्व पर प्रकाश डालते हुए सुषमाजी ने कहा कि 10 वाँ सम्मेलन भाषा केन्द्रित था, जिसमें भाषा पर केन्द्रित 12 समानांतर सत्र रखे गये थे। भाषा के बाद अगला पड़ाव संस्कृति पर ले जाने की चिन्ता में 11 वें सम्मेलन का विषय 'हिन्दी विश्व और भारतीय संस्कृति' रखा गया।

सुषमाजी ने 'सम्मेलन लोगो' पर बनी 'एनिमेशन फिल्म' को यों समझाया कि भारत का राष्ट्रीय पक्षी मोर आएगा और मॉरीशस के राष्ट्रीय पक्षी डोडो को बचायेगा (जो डोडो पक्षी मॉरीशस में लुप्त हो गया है)। 'उद्घाटन सत्र' में दिखाये 'एनिमेशन फिल्म' में डोडो जब डूबने लगता है तब मोर आकर उसे बचाता है। फिर दोनों नृत्य करते हैं।

इस सम्मेलन में 'हिन्दी विश्व और भारतीय संस्कृति' मुख्य विषय पर केन्द्रित उपविषयों पर समानांतर सत्र चलाये गये। 3 जून 1970 को भारत की 'तत्कालीन प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गाँधी' द्वारा मॉरीशस में शिलान्यास किया गया तथा 9 अक्तूबर 1976 को दोनों देशों के प्रधान मंत्रियों द्वारा उद्घाटन किया गया संस्थान है 'महात्मा गाँधी संस्थान'। विश्वविद्यालय स्तर पर इसके 5 संकाय हैं - भारतीय भाषा अध्ययन संकाय, भारतीय विद्या संकाय, संगीत एवं नृत्य कला ललित कला संकाय, मॉरीशस एवं क्षेत्रीय अध्ययन संकाय आदि। यहाँ इस संस्थान के परिसर में 'भारतीय आप्रवासन संग्रहालय' स्थित है। '11 वें विश्व हिन्दी सम्मेलन' के उपलक्ष्य में भारत सरकार द्वारा प्रदत्त 'पाणिनी भाषा प्रयोगशाला' का उद्घाटन इस संस्थान में 18 अगस्त 2018 को श्रीमती सुषमा स्वराज ने किया।

सुषमाजी के नेतृत्व में 10 वें और 11 वें सम्मेलनों का आयोजन बहुत अच्छा था। प्रतिभागियों को किसी भी प्रकार की दिक्कत नहीं हुई। 6 अगस्त 2019 को दिवंगत हुई हिन्दी की प्रबल समर्थक श्रीमती सुषमा स्वराज को कोटि कोटि नमन।

श्रद्धांजली - प्रो.एम.जनार्दनन पिल्लै

प्रो.एम.जनार्दनन पिल्लैजी का जन्म 24-05-1935 तिरुवनन्तपुरम में हुआ। उन्होंने हिन्दी में एम.ए., बी.एड., साहित्य रत्न पास किये। हिन्दी लेखक थे। मार इवानियस कॉलेज, तिरुवनन्तपुरम में हिन्दी विभाग के प्रोफसर और अध्यक्ष थे। दीर्घकाल 'केरल हिन्दी प्रचार सभा' के कोषाध्यक्ष के पद पर उन्होंने स्तुत्य सेवा की।

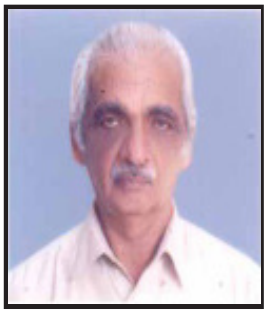

'केरल हिन्दी प्रचार सभा' के संस्थापक श्री.के.वासुदेवन पिल्लैजी (1904-1961) का 25 जुलाई 1962 को निधन हुआ तो 'के. वासुदेवन पिल्लै स्मृति ग्रंथ' (1964, प्रकाशकः केरल हिन्दी प्रचार सभा, तिरुवनन्तपुरम) में कई केरलीय हिन्दी लेखकों ने पिल्लै जी पर 'संस्मरण' लिखे। उनमें से एक थे जनार्दनन पिल्लैजी। संस्मरण का नाम था 'बिखरी हुई स्मृतियाँ'। पिल्लैजी का 'त्यागी' एकांकी राजकुमार सिद्धार्थ के गृहत्याग को विषय बनाकर लिखा गया है- (फरवरी 1961, केरल भारती)।

राष्ट्रीय शैक्षिक योजना एवं प्रशासन विश्वविद्यालय (न्यूपा), नई दिल्ली के आर्थिक सहयोग से हाईस्कूल के छात्रों के लिए, केरल हिन्दी प्रचार सभा द्वारा सन् 2009 में प्रकाशित 'ग्रंथालय पुष्पमाला' की प्रस्तकें प्रो.एम.जनार्द्दनन पिल्लै की भी देखरेख में तैयार हुईं। पिल्लैजी 25 जुलाई 2019 को स्वर्गस्थ हुए। समर्पित हिन्दी सेवी पिल्लैजी को भावभीनी श्रद्धांजली।

मुद्रक तथा प्रकाशक डॉ.पी.लता, आरती, टी.सी. 14/1592, फोरस्ट ऑफिस लेन, वषुतक्काटु, तिरुवनन्तपुरम -14 द्वारा अबी प्रकाशन एन्ड प्री-प्रेस, करुमम्, तिरुवनन्तपुरम -2 में मुद्रित तथा डॉ.पी.लता द्वारा संपादित
Printed & Published by Dr.P.Letha, Arathi, T.C. 14/1592, Forest Office Lane, Vazhuthacaud, Thiruvananthapuram -14,
Printed at Abi Design & Pre-Press, Karumom, Thiruvananthapuram -2 & Edited by Dr. P. Letha